बुध आतम नित्य १२ घटकेअंतर बाहिरे देखिय प्रकटप्रकाश ॥
घटफूटे घटहीनशै नाहीं गगन विनाश १३ तथा जीव अरु देह
यह ज्ञानपंथ गहिदेखु ॥ अविनाशी अजअगुणहै निज आपापद
लेखु १४ जाग्रतमें ज्यों ध्याइये त्यों स्वप्ना करुनेह ॥ करिय सु-
षुप्तिहुमें वहै जो कर्तव निजदेह १५ बंधन काको जगतमें मोक्ष
कौनको तात ॥ अविनाशी अद्वैतको यह अचरजकी बात १६
जरैअग्निसों यहनहीं जीवधर्म अविनास ॥ अस्त्रशस्त्रकरिकटत
नहिं सबदिन पूरणभास १७ गद्दाजात प्रतिबिंबनहिं जिमिकर
सों गुणकोटि ॥ त्योंहीं यहशुचि आतमा क्योंकोउसकत अगो-
टि १८ मर्यो न मरिहै अमरअज भयो न होवन हार ॥ आपु-
हि आपु प्रकाश कृत हरिमतयहै बिचार १९ जाकेरूप न रेखहै
आवत जात न दीख ॥ ताहि स्वर्ग अरु नर्कपथ यह कैसी मन
सीख २० कवि पंडित कोउ सत्यमग पगधारै शुचि काम ॥ तब
सर्वांग सत्यमत गहिपावै विश्राम २१ श्रीहरि अर्जुन को कियो
कर्मयोगउपदेश ॥ सिद्धांतिनआतमबद्यो तबत्याग्यो भ्रमदेश २२
जो आतम नहिं उद्धरत पाप पुण्यकी आस ॥ तेपूरुष निज आ-
शवश करत द्विपदमेंबास २३ जीवकर्मवश विषयरत आसपास
करकाल ॥ भरमाका सब योनिमें जे कलेशके जाल २४ सार
वस्तु सो खोजिये तजि असार निःकाज ॥ मोल अधिक स्वादौ
अधिक शुचि सुगंधि शुचिसाज २५ मूढ़ कांचकरमें गहत तजि
पारस पाषाण ॥ तैसे तू विषयी गहत त्यागत पद निर्वाण २६
व्याल चालि बिकराल जग भवन सरल गतिलेत ॥ त्यों मंगल
तू विषयरत हरिमगु चलुकरि चेत २७ सबयोगनको योगहैस-
कल मंत्रमय मूरि ॥ अछल प्रीति भगवानकी जो दायक सुख
भूरि २८ करमाला जापक लिये मन विषयनके ध्यान ॥ मोक्ष
लालसा वृथाकृत अंत विषय सन्मान २९ यथा गंगजल घट
भर्यो पावन पाप बिनास ॥ सुराविंदु कृत अशुचि तिमि जीव
विषय संगभास ३० मायाको परपंच है नीच ऊँच कुलवान ॥

ज्यों भोजन गोमांसते विप्रगवाय समान ३१ सुरुचि कुरुचिकोऊ
करै आतम तत्त्व बिचार ॥ मंगलमत सिद्धांतके लहै मोक्ष क-
रतार ३२ श्रमजबलगि करिसकत नर तबलगि हितसबकेर ॥
शिथिलभये त्यागत सकल तूतजु तिनहिं सबेर ३३ जाकीबुद्धि
प्रबोध मय ब्रह्माचार सलोक ॥ तेबहुमोल अबंधभव बसैंज्ञानके
थोक ३४ जो मारग भयकार मन सिंह ऋक्ष अजथत्र ॥ जानि
जात किन अपर पथ भूलिजात कसतत्र ३५ मैं स्वपनेमहँदीख
यह जन्मामो गृहसून ॥ मोहि लालसानंदमें जागिलखा सोकहू
न ३६ यहैमोहकी नींदहै ज्ञान दिवाकर नित्य ॥ प्रकटतप्राची
बुद्धिमय जागत पुरुष सत्य ३७ दृगदिधि प्रकट प्रकाश है देखि
लेह किन मीत ॥ अछत नयन कस अंध बन तूतौ परम पु-
नीत ३८ पाप पुण्य सुख दुखतुही छद्म अछद्म समान ॥ जो
है सो तौ आप तू क्यों मग भूल भुलान ३९ यथा रुधिर
सबांग मे व्यापत तथा सुमुक्ति ॥ मनुज देह के संग सँग डा-
लतहै बिनुयुक्ति ४० विषय ध्यान नाशतसुमति यावत कुमति
शरीर ॥ जासुप्रबलतावश बसत अधो यौनि सहपीर ४१ कर्म
तीनित्रिध जानिये सत रज तमके भाय ॥ दोयतजै एकैगहै रहै
मोक्षकोपाय ४२ जिमिअकाशमें नीलता दृष्टि सीवको लेखु ॥
त्योंअसत्य संसारके सकलपदारथ देखु ४३ भानमान अनुमान
करि बदतसकलबुधिवंत॥ जानतपूरण ज्योतिमय ब्राह्मणसेवत
संत ४४ बीज नहोत गुलाबमें जामतअंग प्रताप ॥ जानु चतुर
यौंआतमा अंगअंगकेथाप ४५ अकरकहत दुबिधालगत है असत्य
जगरूप ॥ याहिबनायो जासुने सोप्रभु सत्यअनूप ४६ तीनिकाल
सबदिनरहै तिमिभवको भ्रमभूल ॥ द्वैपद तीसर जीवभ्रम जो
दायकदुखशूल ४७ बालकरचिके ख्यालसब अंतमिटावतसबं ॥
तिमिपरमातम चारिदश समयसमय जिमिपर्ब ४८ सूरज्योति
जहँ बिदितनहिं नखतमयूषन भास ॥ तत्त्ववस्तु गुणकालनहिं
जहवांब्रह्म बिलास ४९ लोकालोक न कहिसकत रूप अरूप न

कोइ ॥ हैतनतहां प्रकाशकृत जातएकही होइ ५० यथा अग्नि
तृणकाष्ठलब जारिकरत निजअंग ॥ तिमि परमातम जीव कहँ
निजमय करत अभंग ५१ ज्ञानवानको जगतमहँ कोमूरुख मति
हीन ॥ विषयभोगमहँ समदुवो भापतनिकर प्रवीन ५२ जाकी
बुद्धिसतोगुणी सोज्ञानी मतिधीर ॥ याजगचाहौ जगरहौ थंत न
यमकीपीर ५३ सकलवस्तुको ज्ञानउर शीलवान शुचिकाम ॥
माया जानत झूंठजो सुमति लहत परिणाम ५४ लोभ सहित
व्योहारसब मानबड़ाई चाह ॥ ताकोबुद्धि रजोगुणी बदतअवि-
वेकबिनाह ५५ आपनपद चीन्हतनहीं जड़लौं रहत सदाहि ॥
मूढ़भावतम गुणबिवश नहींमुक्तिकी चाहि ५६ बुध मण्डली न
जातखल बिचरत सदाकुसंग ॥ तेप्राणीबहु जन्मलगि लखत न
आपतरंग ५७ यतनकरत सुरलोककी बिषय बासनालीन ॥को
पावतपद अमरबुध दुबिधालगी मलीन ५८ जादिन जन्मेजीव
सब तादिनते न मिलान ॥ भयोपितासँग यतनकरि अबकरुमन
पहिंचान ५९ वारिधियथानबढ़तअरु घटत न काहूरीति॥ तिमि
परमातम अकलअज बदनवाक्य श्रुतिनीति ६० इन्द्रवरुणयम
धनपधिखि आदिकसब नशिजात ॥ इनके सेवनते चतुर कहां
मोक्षकीयात ६१ क्योंध्यावत इनके चतुर जोधरीर तजिदेइ ॥
बहुरिजन्म भवमेंगहै लेनिजआतम सेइ ६२ वाणीपरिहरि मोह
की रहुआतममें लीन ॥ ब्रह्मज्ञान प्रतापते पावैमुक्ति अबीन ६३
मायामहा अपारहै क्षरबतसोइ प्रमान ॥ अक्षरपूरण ब्रह्महै यह
सिद्धांत महान ६४ ओंकार सोहं वदत प्रणव अजप हैभाव ॥
मंगलमनके बोधते सम्यकएक प्रभाव ६५ अकलकला बिनुक्यों
कहत करतलोक कर्तार ॥ लिप्तहोततहिं जलजजल लखुकरि
ज्ञानबिचार ६६ मांगिखात महिसेजकृत नग्नरहत तजिलाज ॥
मुक्ति होत मंगल नहीं बिनध्याये तनराज ६७ प्रीति प्रतीति
सनेमनित प्रीतमको मनध्यान ॥ सोचिजाय वाको मिलै तब
पावैकल्यान ६८ काशी मगमें भ्रम बड़ो मुक्तप्रेतहैहोय ॥ सोजाने

बिनुआतमा जानत साधूसोय ६९ जानतआतम भावजे परमा-
तमकेभाय ॥ तेपावत निर्बाणपद दुबिधा देतबहाय ७० बिना
कर्मनहिं सिद्धभव कर्मफलित दुहुँओर ॥ परमहंस कर्मन करत
जानत विषयकठोर ७१ जीवनिआवै सहजही सो कर्तव नित
साधु ॥ सत्यभाव श्रीरामपद जलजसदा आराधु ७२ स्वर्ग रहै
निजपुण्यलग अमरपदारथ भोग ॥ दुबिधामिटी न जन्मकी क्यों
करिभयो वियोग ७३ उड़तपक्षि आकाशकहँ निजबलबुधिअनु-
सार॥पावतअंतन कोटिकृत माया तथा अपार७४ जोजीते माया
विबुध होइ ब्रह्मसोआप॥स्वर्गनरक व्यापै नहीं दुबिधाजन्मसंताप
७५ मोहनिशाजो जगि उठ्यो लहिसबब्रह्मप्रकाश॥ चीन्हींआपनि
वस्तुसब निकट दूरिचहुंआश ७६ जैसेमिहँदीपानमें लाली लखी
न जाय ॥ योग भये सतसंगके परत प्रसिद्ध लखाय ७७ अथवा
तिलमें तेल ज्यों निवसत गंधि प्रसून । तथा निरंजन ब्रह्म प्रभु
तन प्रति दोष बिहून ७८ याशरीर के मथन ते प्रकटततासु प्र-
ताप ॥ आतम ज्ञानी योग रत मेटत भवसंताप ७९ वस्त्ररँगेत-
न मूति रँगि दुबिधा बासशरीर ॥ तत्परध्यान न आतमा क्यों
करि होइ सधीर ८० पांच प्राण बासी वपुष पांचै तत्त्व निरमा-
ण ॥ एक मारगमहँ सब चलैं तौ पावैं निरवाण ८१ कमलापति
की चाहनहिं कमलाकी अति चाह ॥ मूरुख समुझत अमर पद
काल कौर क्षणमाह ८२ तीनि पांच पटलौं तजै भजैनिरंजनदे-
व ॥ समजानै लघु ऊँच कहँ लहै मुक्तिको भेव ८३ पांचबीसको
एक करि मनको देइ भुलाइ ॥ समुझै आतमतत्त्व को आशुमुक्त
ह्वै जाय ८४ गुरु वाणी प्राणी सुनै करै तासु अनुसार॥ धर्म स-
कल जगहेतु हित करै सब्रह्म विचार ८५ अपनी बुधिनिर्मलकरै
बैरागी मन होइ ॥ परब्रह्म एकै रस रहै ज्ञानी कहिये सोइ ८६
जो कुकर्म की चाहमन तौ चर्चा जपयाग ॥ सिद्धि लहतनहिंकौ-
टि बिधि बरणत नीति बिभाग ८७ शास्त्र उपनिषद वेदलौं बर-
णत पूरण ज्ञान॥ सो मानत नहिं दंभिजन कल्पत आनपुरान ८८

दश ब्राह्मण के नाम हैं षटक्षत्री के नाम ॥ द्विविधि वैश्य यक शूद्रहै एकै पुनि परिणाम ८९ जिमि कंकण किंकिणि अपर नूपुर स्वक येनाम ॥ मिलत नाम अर्जुन भयो समुझत बुध गुणधाम ९० पाट एकही भूमिहै खान पानसो एक ॥ द्विविधा पितुमें कुछ नहीं कल्पे वरण विवेक ९१ ब्रह्मा ते उपजे सकल ब्राह्मण बरणी सर्व ॥ करणी उत्तम अधम लघु वरणोत्तम कृतगर्व ९२ नीचआतमा उद्धरै ब्राह्मण पदमें जाय ॥ ब्राह्मण षट कर्मन रहित भ्रमित नर्क भरमाय ९३ शुद्ध नाम सुनि तन कँपयो प्रजा दण्डवाभूप ॥ क्यों क्षत्री चारों कहत तन मन नीच स्वरूप ९४ तजि स्वधर्म रत अपरमत जिमि पतिव्रत रत आन ॥ मंगल तू सर्वांग तजि करु जनि आन बखान ९५ सम्पूरण सर्वांगमत यामें नहिं सन्देह ॥ श्री शुक व्यास वशिष्ठ भृगु मुनि यह गहे विदेह ९६ मान बड़ाई हेतु क्यों कर्म करत जगभूरि ॥ आयुष लौं संगी नहीं तजिके दुखकी मूरि ९७ सातपांचके योगते निर्णय त्रिपद जहान ॥ मूल गहै शाखा तजै सो साधू परमान ९८ मंगल मंगल चारि द्विधि परमातम परसाद ॥ क्षपक ध्यानते कृपानिधि मेटत विविध विषाद ९९ मंगल मनहिं प्रबोधनहिं कोटि उपायन होइ॥ बिनु विराग मारग गहे करणी पूरणलोइ॥ १००॥

इति श्रीमत्सकलअज्ञानहर्तायांसर्वांगसुबुद्धिकर्तायांमंगलविनोदकाव्यांमंगलदासविरचितायांनिर्वाणज्ञानवर्णनोनामचतुर्थश्शतकः॥४ ॥

दो० ॥ कर्म पात्र घटि बढ़ि नहीं कर्म प्रधान सदाहि ॥ शुभ कांजी ऊरध बसत अशुभ अधोगति जाहि १ लोभ विवश मित्रन झखत करि प्रपंच बहु भांति ॥ अन्त समय पातक समहि अध गति बसि पछिताति २ कामवश्य परतिय रमण वेश्यारतनर जोइ ॥ दण्ड पाइहैं यमन पुर नरकनिवसिहैं सोइ ३ याक वणिक पै रत्नजिमि जानत गुण नहिं तासु ॥ पारख कर परि रत्न स्वइ निजगुण करत प्रकासु ४ तथा जीव माया विवश जानत

सो न स्वतंत्र ॥ पारख अनुभव छुवतही प्रकट्यो पूरणमंत्र ५ बिनुखायेइन्द्री शिथिल यथा बिदित बुधिवन्त ॥ तिमिज्ञानी सतसंगबिनु पावत क्लेश अनन्त ६ कहाचहत निरगुण पदहि सरगुण जानत कोइ ॥ मंगल ज्ञानीमौनभल ज्ञानबदै भ्रमसोइ ७ पण्डितपाठ पुराणकिय मूरख मण्डलजाय ॥ कोहेतक चेतक भनै कहैं बड़ो बकवाय ८ कुजन मण्डली सुजन बसि पंथन पावतमीत ॥ दुखित रहत सो निकरगति यहै बात बिपरीत९ चारिखानि भवभूतसब ब्रह्मअंश निरमाण ॥ अज हरिहर तत्पद बदै असिपदसोबिनुमाण१०जावद्भ्रमउरमेंबसै मोहलालसासाथ॥तबलगि मोक्ष न जीव कहँ जन्मै मरै अनाथ११ जानोंचाहत ब्रह्मगति अजअनवद अनकाय ॥ चीन्हत नाहींआपुको कहाज्ञानकोभाय १२ वेद नेति भाषत सदा हरिहर सकत न जानि ॥ लघु धी नर ता खोजमेंसहत अनेक गलानि १३ बालभाव धारै सदा छल प्रपंच तजिदेइ ॥ लिप्त रहै आतम विषे अमी पदारथ लेइ १४ योग भोगमें कठिन पद पूरणताको तात ॥ लघु मति कटु गुण कर्म बिनु दुहूं ओर भ्रम खात १५ धृक बैषानस बिषय रत धृक तपसी अबिचार ॥ बिनु परमातम भजनबुध धृक नरकाय अगार १६ गर्भबासकी सुधिनहीं निज निबन्धगे भूलि ॥ अबको रक्षक होइगो का बिहंसत मन फूलि १७ समन चारके दरश ते मल तजिहौ अकुलाय ॥ बैतरणी महँ बिबिध बिधि मन हिलोर तुखाय १८ सीरल सुधासम सुनतनहिं गुणत नसति उपदेश ॥ सुधि आवैगी मन तबहिं जब यम देहै क्लेश १९ मित्र पुत्र रक्तीभये जग अनित्यमहँआय ॥ ऊंचे मन्दिरकाय नर चढ़ि पुनि गिर झहराय२० जाकी बुधि प्रज्ञा गही विषय धरत नहिंताहि॥ ज्यों महीप के मीतको प्रजा न सकत सराहि २१ कोल भील काननबसत कबि गुण जानन योग ॥ बिद्यमान ज्ञानीनको कव अपनावत भोग२२ यथाअगरबनमहँ जरत गंधिन जानतकोल॥ तथा ज्ञान निरबाण मत मूरख मनको झोल २३ जे शैवी मति

धीर हैं शुद्ध चित्त विज्ञानि॥ ते उत्तम भ्रमहीन जग इमि शिव लिंग बखानि २४ व्यासदेव सब वेदमत जानि सिखायो शूक॥ सिद्धान्तन मत तिन गह्यो मतिमहँ परी न चूक २५ जनकराज गृहबासि भे बिदितबिदेह जहान॥ यज्ञ अमित बलि भूपकिय भो नहिं मनअनुमान २६ नारद घूमत तीनि पुर करतपिशुनता काज॥ दीपनलागत ब्रह्मपद लीलाकृत सुखसाज २७ बामन तनहरि धरिछल्यो बलि नरपतिकोजाय॥ दोष प्रपंचनकछुभयो रहे सदा यकभाय २८ परम सनेही रामके लक्ष्मण बन सँग कीन्ह॥ काल पाय पद प्रीतिको तुरत रामतजिदीन्ह २९ कुष्ठी चषबिन कर बिना आनौ इन्द्री हीन॥ आतम ध्याये मोक्ष को पावै बदत प्रवीन ३० धायकिये ब्रत,आसुरी पूजे तिनके पीर॥ क्लेश सह्यो निज अंगअति व्यथा न मिटी शरीर ३१ जो न बेद पौराणमें काव्यबतावै नाहिं॥ तहां बैष्णव शैवक्यों शाक्तब्रह्मबिद जाहिं ३२ पूजिय बेष प्रताप सों धूर्त प्रपंचउलोग॥ प्रकटे छल परिणाममें सब बिधि होत अयोग ३३ तन धन चपैं मित्रहित जीव लोभ तजिदेइ।सोप्रीतम संसारमें बिपति सहायकरेइ ३४ जग नर प्रीति प्रतीति असि प्रभु पद प्रीतिअलेख॥ जोपुरवै नर नारिसो मेटै कलुष बिशेख ३५ जन्मभयो सामान्य पद करणी कर्मद्वितीय॥ सेवत पतिब्रत कंथभइ बिन सेवा कुधितीय ३६ कल्प कल्प कल्पित रहत ज्ञानी कर्मज माहिं॥ बुधि बिनु नर रत बिषय महँ पुनि पुनि आवहिं जाहिं ३७ कूकुर ज्यों भूकत बृथा दर्पण बिम्ब स्वहेरि॥ त्यों मति बिनु बिषयक मनुज दुख पावत चहुं फेरि ३८ सिंह निरखि प्रतिबिम्ब निज मर्यो कूप परिमूढ़॥ तथाजीवमाया बिवश लखत न तत्वअगूढ़ ३९ काक अस्थि लै भगि चल्यो देखिपक्षि पछितात॥ तैसेलखि हरि भक्त को बिषयक नरपछितात ४० छर्दिरोग बशभोजनै बमन करत नर नारि॥ श्वान स्वादसों भषतहैं निजमन महा सुखारि ४१ तिमि संसारी संतजन परिहरि हरिरस लीन॥ मूरख भोगत

स्वाद सों पापमूल को लीन ४२ ब्यास बंश शुकदेव ज्यों दैत्य बंश प्रह्लाद ॥ पूजनीय पावन भये सुनुमन भजन प्रसाद ४३ क्षुद्रनदी पावससमय चली कु मगहितुराय ॥ तिमि मूरखलहि सम्पदा हितु अरि लखत सदाय ४४ कोहौं अरु आयों कहां अंत कहां बिश्राम ॥ निज पद खोजै बुद्धि शुचि तासु बिचारी नाम ४५ लघु दीरघ एकै लखै निज आतम में लीन ॥ ताहि कहत समुभाव बुध करै न कर्म मलीन ४६ दान दया उर बास मन निग्रह इन्द्रिन युक्त ॥ दम साधनको सिद्धि मत को न होत जग मुक्त ४७ सो विकार व्यापै न उर जो अलोकदा लोक ॥ चीन्हें पूरण ज्योतिकर बिम्बजीव धिनुशोक४८ अकल कलासों जगरच्यो महाकला अवतार ॥ निगम संत पण्डित बदत सो प्रभु महा अपार ४६ नारायण जन्म्यो जबै ब्रह्म बाक्य ते तात ॥ चतुरानन तानाभि ते ताते सब जग जात ५० माया ब्रह्म अपार द्वौ काया कर्म बिहीन ॥ माया चीन्हें ब्रह्मको जानै मर्म प्रवीन ५१ मर्म बूझतहि जीव नष्टि ब्रह्म लीन ह्वै जाय ॥ को बरणै अद्वैतको भेद बुद्धि भ्रम खाय ५२ जाके जानतही मिटत जीव भाव भव भेद ॥ बिन जाने भ्रमबश फिरै यह मत अगम अखेद ५३ यथा कष्टके अंतरहि निवसत सिखिनप्रकाश॥ संघट ते प्रकटत तुरत तिमि तन ब्रह्म विलाश ५४ इन्द्र जाल बश पंखते होत परेवा रूप ॥ यदपि असत्य न लखि सकत तथा जगत भ्रम कूप ५५ नट सांचाझूंठीकला समुझत भूमन नशात ॥ तिमि माया परमात्मा पै नहिं बुद्धि समात ५६ दीप प्रकाशित बहिगयो खोजत लोचनहीन ॥ तिमि अज्ञानी ब्रह्म को क्यों लखिपरै अक्षीन ५७ अपनी करणीते भयो चौर बन्दि महतात ॥ दोष लगावति विधि लिखनि यह सुनि मन पछितात ५८ सातदिवस जाने किये सप्तस्वर्ग फलवान ॥ एक रहै मर्य्याद जग सब जगयहै प्रमान ५६ आखर बिरचे गुणिन जेतिनमें शब्द प्रमान ॥ तासों भव सब जीव मन पावत मोक्ष

महान ६० ओंकार पद लौ चढ़ै अक्षर मारग लेइ ॥ आगम मरण नशाय पुनि जानै आपन भेइ ६१ भेद लखेबिनु आपनो लहै न ब्रह्मज्ञान ॥ ताबिन मोक्ष न जीवको भाषत वेद प्रमान ६२ बारम्बार न मनुज बपु पावत जीव सुजान ॥ अब कीचूके युगनि लगि भ्रमैयोनि सर्बान ६३ दुबिधा दोष मिटाय के सत्य प्रीति करु तात ॥ मंगल नेहप्रताप ते मित्र धाम लगि जात ६४ मित्र मिले आनन्द को तू प्रापति मनहोइ ॥ सम्यक मनकी कामना कहुप्रीतम सों सोइ ६५ कपट कतरनी कांखमें काटत प्रीति पटान ॥ अंत खुले मित्रत्वनश कहा मित्र सन्मान ६६ बहुयोजन पक्षीउड़त संध्या आवंत धाम ॥ त्यों सबदेही ब्रह्ममें लिप्त होत परिणाम ६७ बिन करणी भरणी भये मित्र द्वार बिनछद्म ॥ प्रीतिमानि आपन करत बासदेत निजसद्म ६८ धर्म कर्मकी सिद्धि है श्रद्धाही के साथ ॥ श्रद्धा सात्विक बिन चतुर धर्म सैन बिन नाथ ६९ बिद्यापढ़ि पंडितभये सब कोउ कृत सन्मान ॥ ईशभजन बिन सर्बथा दुखरूपी अज्ञान ७० पढ़ि पिंगल मंगलरचे छन्द कबित्त अनेक ॥ मनबश आव न बिषय रत भूकतश्वान कितेक ७१ तूमंगलमन अंतरहि पूरणराखु प्रतीति ॥ बाहिरसों कछुकाज नहिं यहै ज्ञानकीरीति ७२ न्हायेधोये वपुष के जापै होत्यउ मुक्त ॥ तौ पाठीन स्वजन्म भरि जल मधि रहत प्रयुक्त ७३ जोमाला बांधेतरत जन्ममरण घरि कोइ ॥ बसत कीटतौ काष्ठनित परमहंसहै सोइ ७४ पूजेमूरति मुक्तिको पावतकोउ संसार ॥ तौबहुनरनगबासिनी करतअमित ब्यवहार ७५ सत्यप्रीति बिनु मूढ़मन मुक्त न होवैजीव ॥ दंभ कपट भव कोटिकर भरमिहि द्विपुर सदीव ७६ अछत अक्षगे सुतनके जबलगि बिघन दिखात ॥ दूधपियावत परि हरत उपजत दुखकी बात ७७ जानिकरत दुर्कीमको मानिन मानत ज्ञान ॥ मंगल तूसबींग ते पावैशुभ निजथान ७८ निंदा औरनकी करत आपु अशुचि वपुधारि ॥ शिखि बोली भोजन उरग बिषय

ते बुधनर नारि ७६ जटा लटा तन पलित अति मौन साधना कीन ॥ को उपदेश न करि सकत शिष्य समाज प्रवीन ८० भीखकाज उरमाल शिर भूति जटारचि कोपि ॥ ठगत अबूझन बूझमति संतकहावत सोपि ८१ अहंकार बशमित्रसन भुजगहि छल रसकीन ॥ को ज्ञानी कर्त्ता करम यमचर त्यहि दुख दीन ८२ पापी सातों स्वर्ग बसि अधोगिरत बिन चूक ॥ पाप बासना उरबसी ज्यों चातककीकूक ८३ तजत न कपटी कपट को सतसंगतिहू पाय ॥ यथा नीम तरु मलयसँग कटुता नाहिंनशाय ८४ लोष्टसंग हाटक यथा खोयेनिजपदमोल ॥ नीचसंग त्यों सुजन परि ब्राह्मण मतलहकोल ८५ आतम आपु अदृश्यहै दृश्यमान प्रतिबिंब ॥ यह सुजानजाने लहत शुचिमारग न बिलंब ८६ लोकलोक मर्य्यादहै वेदबचनकी तात ॥ मूरख सो मानत नहीं कहांमोक्ष दरशात ८७ कलिकठोर बाणीसुनै नीचनको कुलवान ॥ तिमिज्ञानी पाषंडमत मन मनकृत अनुमान ८८ जिमिलोहेका ताउहै तिमिजीवन तूजानु ॥ परिहरि आन भरोसभजु प्रभुस्वरूप बिज्ञानु ८९ नभशिर हरिशशि चष उभम भुजहरिहर घनबीजु ॥ उरविधि उदर सुलोकयह देहबिराट कहीजु ९० बिश्वरूप आपुनबन्यो बिश्वंभर पुनिआपु ॥ मंगल दूसर कौनहै जासुजपत तूजापु ९१ ज्ञानिनसोंहौं प्रश्नकियएक दोइकीतीनि ॥ कहामिलै षटएकरस दूसर परत न चीनि ९२ तबमंगलयों फिरिकहा नामभया रसकौन ॥ कहानाम सर्वांग को बरणै मूरखतौन ९३ याजगमें बिनुनामके बस्तु न जानी जात ॥ यातेसबते अधिकम्वहिं नामप्रताप दिखात ९४ कमठ पीठि जामेंकबौं केश न भ्रममनहोइ ॥ मुक्तिपदारथ भजनबिनु पावै अचरज सोइ ९५ कोपसमय बुधिथिरनहीं रहत सत्ययह बात ॥ जैसेनिंदक बादते ब्राह्मण आपुपलात ९६ मतिदृढ़ आपनि कीजिये परमारथकोसेइ ॥ शुद्धमनीषी अंतमें शुभगति जीवहिदेइ ९७ अमितपाप कारक सदा मंगल मतचांडाल ॥

किमिलागै सतपंथमें बिकल रहत त्रैकाल ९८ बीस बिसेगति शुभलहै आतम ध्यावैकोइ ॥ पूरणकला प्रकाशमय क्यौंनलीन मनहोइ ९९ मंगलबार अपारत्वहिं समुझायो मननीच ॥ तदपि न मान्यो दुष्टतू फिरिगा बिषय नगीच १०० ॥

इतिश्रीमत्सकलअज्ञानहर्तायांसर्वांगसुबुद्धिकर्तायांमंगलबिनोदकायां ॥ मंगलदासविरचितायांज्ञानोपदेशनिर्बाणपदबर्णनोनाम पंचमप्रशतकः ५ ॥

दो० ॥ चारिओर अध ऊर्धलौं नामप्रकाश दिखात ॥ सोजाने बिनु मूढ़मन क्यौंदुर्भाव नधात १ नामभेद जानतनहीं काम कल्पनाकोटि ॥ तिन प्राणिनकी जगतमें मेधाउत्तमखोटि २ बिनु जाने हरिनामके कियेबिना गुणगान । सतमारग सूझत नहीं जीव भ्रमतद्वैथान ३ जबलगि नामप्रतापउर प्रकटतआइनतात॥ तबलगि मग विवरणकरब महाकठिन दुखगात ४ कालकराल सचेतको निजबश करत अचेत ॥ भवसागर में जीवकहँ विविध हिलोरेंदेत ५ जानत नाम न जासुको वपुनिरख्यो भरिनैन ॥ जगतमांझ फिरिआनसों बरणत चतुरबनैन ६ नामअधारीकपट गत ममता रहित सधर्म ॥ बिचरत या संसारमें बधतन कर्मा-कर्म ७ जपोनाम अजपा सदृढ़ ध्रुवलह अतुलस्थान ॥ श्रीप्रह-लाद सुनामबल कियोबिष्णु सन्मान ८ टेकनत्यागै ब्रह्मब्रत नाम जपै चितलाय ॥ पूरणप्रीति प्रतीतिसों हरिपुरसो चलिजाय ९ जहांगये बहुरैनहीं पुण्यक्षीण नहिंहोइ ॥ शुभकारी सर्वांगमति पावतहैं पुरसोइ १० रामनामको बलबड़ो विदितवेदविज्ञान ॥ ज्ञानदीप उरउज्वलितकरि कीजिय ताकोध्यान ११ रामनाम प्रहलादध्रुव जप्योतधीर सज्ञान ॥ भक्तशिरोमणि होंतभे क्यों गुणकरिय बखान १२ महाबली गुणवानकवि सतमारगकेदास ॥ योगक्रियाकरि नामको सबदिन उरदियबास १३ बाल्मीकि गति नामकी जानी ज्ञानप्रयुक्त ॥ तीनिकाल दर्शकभये आगम कीन्होउक्त १४ रामकाम तरुबारिदिशि रमण सकल तनकीन्ह॥

पाप पुण्यकै तुल्यही सबजीवन फलदीन्ह १५ रमत कीटते
ईशलगि रामपरम शुचिबस्त ॥ भावबश्य सबठामहै देतमुक्ति
जनहस्त १६ रामनामबिन कोटिबिधि बुधतगहै बिज्ञान॥ बि-
दितज्ञानबिनमोक्षपद मिलत न कोटिउड़ान १७ रामकर्मकी
दाम है शमसुध्यान समाधि ॥ निश्चयबश मुक्तिहिगहै बुधदे-
खैआराधि १८ नाममात्र जे तीनिपुर लखिबपु जानेजात॥
जानत कौन अनामको यद्यपिहृदय समात १६ अलख कहाजो
लख नहीं अमल कहा मल राखि॥ सुमति कहा बिन कुमतियों
देत चतुर कबि साखि २० रूप कौन अनरूपको जो नहिं जानन
हार॥ अंकल बिचारत कला सों जिनके बिमल बिचार २१ राम
नाम उर धारिये मंगल सरलस्वभाय॥ द्विबिधादोष बिहायनित
परम तत्त्व ले ध्याय २२ जासुनाम अज हर रटत योगसमाधि
लगाय॥ ताहि ध्याउ तजि दुष्टमति अंत मोक्ष ह्वैजाय २३ काल
कलाबिनु लखि परत नारायणकोभाव॥ कुत्सित दृष्टि नदीसही
बदत ऋषय शुचि ठाव २४ ऊपर रटना नामकी अंतर समता
सोह॥ बिचरै निज इच्छा सरस नाहिंन ब्यापत मोह २५ आन
नीच अरु ऊंचकी निन्दा तजै सुजान॥ जब लीं दै तबआपकोसों
नर ज्ञान निधान २६ आपनि करणी शुद्धनहिं कहादैवको दोष॥
खीझत भाँति अनेक नर क्यों पावैं संतोष २७ कोउ कहत सुर
पुर सुलभ कोउकहत सुरधाम॥ मंगलमत निरबुद्धिकेनरकसुल-
भ परिणाम २८ देव यजै भक्तिहि करै ब्रत तीरथ करिजाय॥
स्वर्ग लोकको बुधभरत नरक बिनाश्रम भाय २६ दंड जानि
भोगी तजतनरकपंथकी बाट॥ करतक्रिया सोंहेतु ज्यहि बिल-
सै सुरपुर हाट ३० संन्यासी स्वर्गहि हरत पुनर्जन्म अनुमानि॥
आतमध्यावत कर्मबिनु फलआशाकृतजानि ३१ जासु पुण्यपूरण
उदय भव में परत लखाय॥ जीवत ताको स्वर्गफल मंगल मत
दरशाय ३२ पापी जनकोजीवतहि नरकजगत महँ होइ॥ ज्ञान
वान तू देखिले पुनि लखिके तजु सोइ ३३ एक दोउ पुरकी

क्रिया निजकर लेत सम्हारि ॥ जीवत भोगत बिबिध सुख जात अंत पुर चारि ३४ एक इहां अति दुखलहत तपसाकर मनमाहिं ॥ लीन होत पद आपने दुखसुख ब्यापतनाहिं ३५ एक प्रथम संचित बिवश भव भोगत कृतपाप ॥ अंत नरक बासै लहत अति कलेश संताप ३६ एकन संचित कर्मकरि भोग लहत यहि लोक ॥ अरुन सत्य मारग चलत अंतनरकलहि शोक ३७ चारि भांति नरनारि जग मंगलमनको ख्याल ॥ आन मरत अहिके डसे मोरहि बधतन ब्याल ३८जो परिणाम नफल मिलत करणी सम हरिद्वार ॥ तौयोगी भोगी अधम क्यों जगकरैबिचार ३९ बिषय पाय तन हठि तजै अमीपान मृतुहानि ॥ ऐसे कर्माकर्म को फल लीजै अनुमानि ४० कनक रूप हरि भजनहै चूकेउ घटि नबिकाय ॥ पाप कांच फूटे चतुर कोउ गाहक ठहराय ४१ क्यों सांचेको त्यागि मन मग असत्यमें जाय ॥ आपनपौ पहिंचान किन आपामध्य समाय ४२ निर्गुण सर्गुण सुलभद्वौ दंभिनके मुखमाहिं ॥ मंगलके मत कठिनअति दोनोंपंथ सदाहिं४३ प्रथमै साधै जगतमत पुनि करिसबीचार ॥ सगुणरूप ध्यावैप्रभुहि नानाग्रंथ बिचार ४४ श्रीराधा पति चरणरति गीताग्रंथ बिचारि ॥ गहै बाट बिज्ञानकी भवभ्रम देइ निवारि ४५ पुनि बिवेक शम दमकरै योगअंग हठरूप ॥ सिद्धियोग पुनिलाधिकै पावैबस्तु अनूप ४६ शनै शनै मारगचलै पहुंचै मित्रस्थान ॥ कूदे एकहि बारमें क्यों करिजाय सुजान ४७ शनै रचत कंथा शनै पंथ तरबजलधार ॥ शनैबित्त बिद्यालहत त्यों बिज्ञानबिचार ४८ जे भूले हठपंथमें तेनलहैंगे मोष ॥ त्यागिभूल सत्यहिगहैं तो पावैं संतोष ४९ सतसंगति पारसमनुजहै कुधातलहि संग॥रूप लहत गणियवश अंत मोष गतिभंग ५० पारस सतसंगति भई हरिगुण खानिप्रताप ॥ ताते सेइय खानिजग्रहि पारसहोइअताप ५१ बैद्य बुलावत रोगहर करणीफल बिसराय॥ बिनुभोगे निजकर्मफल मंगल रोगनजाय५२ मिथ्या साखीदेतहैं परतिय

रमत सप्रेम ॥ अानकर्म निंदककरत ते नर घने सनेम ५३
वेश्यागामी जीवहा सखाद्रोह छल कारि ॥ अपकाजीते भक्त-
भव गलमाला ह्वैचारि ५४ काहिज्ञान मंगलकहत कोअज्ञान प्र-
माण ॥ जानब भूलब ह्वैकहत नारायण निर्बाण ५५ नदीपंथमहँ
देखिकै भूपरचायो सेत ॥ त्यों ज्ञानीपथ धर्ममें थपेसेतवचदेत ५६
चलाजाय लघु प्रथुल कउ तामारग भ्रम हैन ॥ पहुंचै इच्छा
धाम मधि अघअरिरोंकि सकैन ५७ बिपति देखि अकुलायनहिं
संपतिमें नभुलाय ॥ कर्म वश्यजानै सबै आतमरहै समाय ५८
जीव वृत्तिदाता अहै त्रैपुर पालनहार ॥ क्यों मंगल मनतूभ्रमत
वेइ तोहिं सबिचार ५९ नृपति प्रजाकिय आपुही सबमें रह्यो
सुपूरि ॥ क्यों डरमानत आनकी भजुकिन जीवनमूरि ६० सब
के शिरपर आपुही सदाबिराजत आहि ॥ सो तेरी प्रतिपालना
करिहि भजसि किन ताहि ६१ बीतिगई तासों कहा आवन सों
काकाम ॥ जोहै सोई धन्यहै भजुहरितजि संग्राम ६२ बालअ-
वस्था मोह मय खेलतगई सिराय ॥ कामकला कामिनि बिबश
ईश्वर भज्योनभाय ६३ जरठभये तृष्णाबढ़ीहृष्टिथकी बलथोर॥
ध्यावतनहिं परमातमै कहत अखिल जग मोर ६४ बाणी बदि
नहिंसकतहैं पहिंचानतनसखान ॥ तदपि न ध्यावतब्रह्मको आइ
कालनियरान ६५ किये जन्मभर पापही धर्मरहित सबभांति ॥
यमन चार हनि मुद्गरन जीवहि बाँधेजाति ६६ कीबाँधायम
पासमें मारगयो कोभूल ॥ जानिबूझि मंगल चतुर गहत भूलं
तरुमूल ६७ इच्छाचारी जीवको यमचर कर्मप्रताप ॥ दंड देत
हैं अंतमें बड़ अचरज संताप ६८ या जगमें दुखहै बड़ो चिंताको
मन मीत ॥ जाकेबश दुबिधा रहत सोतन बिपति अतीत ६९
जाकी माया अति बड़ी त्यहिकिमि जानै कोइ ॥ आपन गति
जानतनहीं क्यों सुखपूरण होइ ७० खोजत जगकी बस्तु को
जन्म सिरानोसर्ब ॥भज्यो न श्रीभगवानको अंतजीवकोपर्ब७१
जाकी बुधिनिर्मलसदा ताकी मुक्तिसदाहिं ॥ मायाब्रह्म कामी

रहत भ्रम परित्यागत नाहिं ७२ अंधकारमें अंधकी एक दशाढ़ काल ॥ दृष्टाको भ्रम अंध सम तिमि मूरुख गुणपाल ७३ सात स्वर्ग सुखकोलहै क्षण सतसंगप्रसाद ॥ यथा त्रिबेणी न्हाइनरमेटत पापबिषाद ७४ चातकज्यों लवसों रटै निज प्रीतम को नाम ॥ सिंधुगंग जलसों बिबुध तासुनहींकछुकाम ७५ पापदृष्टि सों देखिहै क्योंतू पूरणरूप ॥ पापपुण्यको भावनहिं सोप्रभु अकल अनूप ७६ पुण्यपापसबके लखत अंतर बाहरसोइ ॥ कोटि छिपावै कपटकरि आपुबिदित जगहोइ ७७ जोकरणीनीकीकरैसो पावै सुरधाम ॥ मंगल जगकरणी धँध्यो आदिमध्य परिणाम७८ कर्मवान क्यों भूलिहै निजकरणीको काज ॥ ज्ञानवानज्यों ज्ञान को खोजत तीनि समाज ७९ मातपिताप्रिय बंधुसुत स्वारथरत फब जानु ॥ बिनुस्वारथ परमातमा तासु भजनमनआनु ८० चिंतारूप भुअंगनी नरतनबिलमेंबास ॥ अमृतबिवर्द्धकचारि बिधि क्यों लखुब्रह्म प्रकास ८१ भ्रांतिबिना श्रद्धानहीं बिनश्रद्धा नहिं मुक्ति ॥ शुभकारी आतम क्रिया यहै ज्ञानकी युक्ति ८२ समुझायो समुझैनहीं कामी रक्तिबाम ॥ ज्ञानगली बिचरत न खल क्यों आनँद परिणाम ८३ सांचेजोया जगतमें ते प्रवीणता रक्त ॥ आतम शोधत ज्ञानमग निशिदिन त्यहि आसक्त८४ भक्ति बिना बिज्ञानकी भक्तिसिद्धि नहिंतात ॥ भक्तिबिना आतम सुखहि निरखतनहिं बिख्यात ८५ कूकुरकी ज्ञोदशाहै त्रियाप्रसंगैत काल ॥ सोइदशा यहिजीवकी सँग आशा चांडाल ८६ ज्ञान कतरनी मोहपट काटत बिबिधप्रकार ॥ आतम शोधत तीनि बिधि तजि दुबिधा ब्यवहार ८७ यथा अम्ब के बिटपहैं तिमि हरिजन संसार ॥ फले पसारे हेतहैं सबकेसहत प्रहार ८८ जानि बतावै भेदनहिं बिन जिज्ञासिहि ज्ञान ॥ तजै आशिषा शाप द्वै सेवैपद निरवान ८९ आपन पद आपुहि लखै आनहिं क्यों तू भाखु ॥ तजि हलुकाई जीवकी गुरुतासोंहितुराखु ९० बाको मायाका करै जाकेपुण्य न पाप॥स्वर्गनरकचाहतनहींशुद्धचित्तगत

तापद९१ जावन्मोह बिलास कृत तावद्रोग कि चाह ॥ याहित्यागि फिरि जीत्रयंयह पकरतआपनि राह९२ प्रंगगहित जैनकोटिकृत को कुलीन शुचिसन्त॥ज्यों चकोरपावकभषत कौनस्वाद बुधिवंत९३ जोमत अर्जुनकोदियो श्रीयदुनाथ दयाल ॥ ताहिनिबाहै जगत कउ मोक्षलहै बधकाल ९४ बालक तोतरबातको बूझत चतुर समाज॥ त्योंमंगलकी वारता साधनके शुभसाज ९५ जाबिन रहत न क्षणकयक तागुण दोषनलेत ॥ यथामीन जलको चतुर तजि फिरिप्राणहिंदेत ९६ जोप्राणी लहसुन भषत आवत गन्धि न ताहि ॥ त्योंअपकारी अपयशी मंगल कहालखाहि ९७ वाकी समताकोकरै जो नहिंमानतवेद ॥ बुद्धि आसुरी यवनज्यों क्यों जानै हरिभेद ९८ बीजबोईयो शालिको उपजत भी गोधूम ॥ याहि निवारत बुद्धिकिमि अचरज झूलनझूम ९९ मंगलहरिके नामबल सोवतनींद अघाय॥ स्वर्गनरक हरिजोचहैं करैंको अब पछिताय १०० ॥

इतिश्रीमत्सकलअज्ञानइर्त्यांसर्वागसुबुद्धिकर्त्र्यांमंगलबिनोदकायां मंगलदासबिरचितायांज्ञानोपदेशनिर्वाणपदवर्णनेनाम षष्ठमश्शतकः ६ ॥

दो० ॥ मोठीबाणी शत्रुकी दुखदायक सबभांति ॥ जिमि मीठा बिपकालकर ज्ञाननैन दरशाति १ मित्रहेतु श्रीरामजी बालिबध्यो निःपाप ॥ मंगल तू निज मित्रहित कस न हरत सन्ताप २ परमप्रीतिकी भावना व्यापतमित्रहिपाहि ॥ जानत पूरणधर्मसो श्रुतिवतकर्म कमाहि ३ बिद्याजाकी सत्यहै सोबैरी भलहोइ ॥ मूरुख मीत कलेशकर ज्ञानमान लखुसोइ ४ भक्ति बिनाशन दुष्टबहु कामादिक निजसंग ॥ ज्योंजल क्षीरहिअमिल कउ करति भिन्न हितुभंग ५ जोनहिं जानत सत्यपद मोहमानमें लीन ॥चीन्हत नहिं थिरताजनिज यद्यपिजगत प्रवीन ६ कोटि चतुरता जगतकी भजनबिना निःकाम ॥ जिमिबिनु अन्नअनेक धनक्षुधा सकत नहिंथाम७ रूपमारते बिपुलविधि सुन्दरआनन

चन्द॥ भजनबिना टेसूयथा बिन सुगन्धि द्युतिमन्द ८ अमर पदारथ कौनभय समरकंहा यहिलोक॥ भजनभाव शुभ अशुभ द्वौ दायक सुखअरुशोक ९ ज्ञाताको दाताकहा कोबिद्याधरतात॥ निजुजानै दाया हृदय ईशगुणनकी बात १० ठगन ठगत जाने नरहि भरमानत पहिंचानि॥ तिम्मिमाया हरिदासकी मंगलमन अनुमानि ११ करणहीन बैनन सुनत नयनहीन नहिंदीख॥ योंमंगल अज्ञानतू गंहत न मेरीसीख १२ कामीकामी याम चहुं गामी सामीनाहिं॥ हियअनुरागन मुक्तिको मंगलसन्तसदाहिं १३ ज्योंनिज गृहको नेहहै त्योंहरिपद किनलाउ॥ मंगल भव पद प्रीतिवश अन्तमुक्ति पदपाउ १४ होनहार सो होइगी मिटै न कोटिउपाय॥ मंगल मनक्यों शोचकृत भजुआतम चितलाय१५ ज्योंकरीप पटमेंधरे बचन कलङ्क बिहीन॥ त्योंकुसंगमें नीचम-ति होतकहत परबीन १६ बारबार सिखवत अहौं मनःवहिं उत्तमज्ञान॥ तूनतजत प्रारब्धबश यद्यपि महासुजान १७ लोभ बास उरमेंकरत अपकीरति चहुंपास॥ मंगलदेख्यो नयनयह तदपि नतजबिनयास १८ ज्ञाननयनदेखै मनुज चारिओर प्रभु रूप॥ अज्ञानी मंगलसरस परेबिषयकेकूप १९ सातस्वर्गअपबर्ग को सुखन मोक्षसमआहिं॥ मनुज ब्रह्मविद सोलहत यामहँसं-शयनाहिं २० यातनमेंअतिघोरहै पापिनको मनमूढ़॥ चुपका-वत किन तिनहिं तू दैमन ज्ञानअगूढ़२१ शत्रुमित्रद्वौअंगमेंमंगल करतबिलास॥ जानिहितू सतसंगकरु करहिनअहित प्रकास२२ बैरीके सतसंगमें कोपावत सुखदेखु॥ तातेमंगल अरिन दिशि नेक दृष्टिजनिलेखु २३ पांचब्रतावत सातहैं सातधामकेआसि॥ ज्ञानवंत जानतअहैं तूदुबिधा देनासि २४ कालपाशमें जगबँध्यो आवतजात अधीर॥ काहिज्ञान मंगलबदत सबसंसार सपीर२५ ज्ञानसुनै चितलायकैध्यान आपुकरकोइ॥ बिनुभ्रम मंगलअंतमहँ पावत मुक्तिहि सोइ २६ त्रियमलनरमल मिलिजग्यो माया कृत भैदेह॥ ब्रह्मअंश करणी बिवश निवसत भो न संदेह २७

जठरानलकी ज्वालसों बिकल होत जब प्राण ॥ गर्भमूत्र मलगंधि सों तब ध्यावत भगवान २८ जोपैतिया अदंडते आपुरक्षजगदीश ॥ जन्मपाय तुवभजनतजि करौंनकछु बिसवीश २६ हरि रक्षा सबबिधिकरी सुनि निबंध सतिभाय ॥ जन्मकाल लगि क्षेयहर जन्मतदयो भुलाय ३० उपजत खटके पेटमें दुबिधा मोह प्रताप ॥ कीटादिक कबहूं डसत तबबहु करत बिलाप ३१ बालदशागइ खेलसँग आई तन तरुणाय ॥ काम कलामद उर बस्योनहिं हरिभजन स्वहाय ३२ आभूषण पट चाहिये भोगहेत भल नारि ॥ निजकर मंगल अधमनर देवत धर्महिं टारि ३३ जरा व्यवस्थामें भयो मोहबास उरआइ ॥ जाबश नारायण भजन मंगलदयो नशाइ ३४ कोटिभांति गुरुऋपिदई ज्ञानिन कहा बुझाय ॥ तदपिन त्यागी दुष्टता गई आयु नियराय ३५ शमन चारकर पाशलै आयेताकेपास ॥ देखिभयानकवेपकोमल तजिजीव सत्रास ३६ मारिमुद्गरन बाँधिपग दक्षिणचले घसीटि ॥ व्याकुल कीन्हे बिबिध बिधि लोह मोंगरन पीटि ३७ लै डार्‌यो कुम्भी नरक भर्‌यो पीबवत नीर ॥ कीटकाग अध ऊर्ध्व में गहत लहतबड़िपीर ३८ शूकर कूकुर योनिमें नरकभोगअवतार ॥ ज्ञानिन ध्यावत आतमा होय जन्मनिरधार ३६ ब्रह्मचारजो नरकरैं तजिदुबिधाको खेल ॥ सोप्राणी उत्तम महा करत मुक्ति पदमेल ४० जोगृहस्थ हरिभजन में निरतरहै दिनराति ॥ दया धर्म्म युत हरिभजै आशु मुक्तिहै जाति ४१ बानप्रस्थ कर्त्तब कठिन साधिजो पावै कोइ ॥ नारायणकी कृपाते पावै मुक्तिहि सोइ ४२ संन्यासी की मति सुगति जीवन मुक्तिसदाहिं ॥ को जानैता जीवको जन्म मरणहै नाहिं ४३ चारों आश्रम सूचित अतिसाधै कोउसाध ॥ पावैमोक्ष प्रयास बिनु शुद्धचित्त अनवाध ४४ या भवमें भयजालहै भागुमीत तू बेगि ॥ नातरु पावै दंड अति और अपत्य अनेगि ४५ पापाणी भाजन यथा टूटत मृतिका तूल ॥ बुद्धि आसुरी में चतुर तैसे परत सभूल ४६ बालकलौं

जो भावहै ताहि गहै शुचि बुद्धि ॥ रहैलीन पै नहिंमिलै सोपावै मति शुद्धि ४७ बावर ज्यों कहि सकतनहिं स्वाद भाव बिधि कोटि ॥ त्योंयोगी हरिगतिकहै बरणत सो बुधिछोटि ४८ ब्रह्म लखै कउ नैनसों देखत आपु नशाय ॥ यथा लोनपयमें मिलै फिरिनाहीं दरशाय ४६ चारि करतहैं चारिजन शुचित्यागत हैं चारि ॥ मंगल ज्ञान प्रताप सों जात जन्म निरधारि ५० सत्य प्रीति बश सर्बदा नारायण मनमीत ॥ आनभाव तजि नेहदृढ़ राखु सधर्म अभीत ५१ बिनुध्याये श्रीपालपद भ्रमिहै जन्म अ-नेक ॥ गर्भदंड अतिशयलहै होइन बरण बिबेक ५२ बसतनसो बैकुण्ठमें नहींक्षीरदधि बीच ॥ मंगलबाणी सत्यबद रहबिश्वास नगीच ५३ अर्ब खर्ब धनहै वृथा प्रिय अप्रिय मृतु काल ॥ तू मंगल तजिभूलभव भजिले मदन गोपाल ५४ अर्थन जाकेनाम को बरण मध्यनहिं आहि ॥ आदि कहतपुनि मध्यभ्रम अंतकौन दरशाहि ५५ अलख भणतलख कौनहै अकरन कर्त्ता सोइ ॥ अगुण बदत गुण कौनहै दुबिधा देमनखोइ ५६ अनुभवजाको नामहै संभव सब संसार ॥ नारिपुरुष क्यों जानिये परि पूरण करतार ५७ कोऊ दंभी यों बदत जगछलिबेके हेत ॥ नयनन निरखतब्रह्म हममानतसदाअचेत ५८ जोपैनिरखै अक्षसों तौन अगोचरनाम ॥ मूरुख सुनि पतियात यह बुधत्यागत मनभ्राम ५६ यती सती जानतनहीं सोदंभीक्योंजान ॥ मंगलतूभजुनेह करि हरिपददाकल्यान ६० तीनिकालबिनुध्यानहै लीननमाया होत ॥ यों जानै भवसरितरै चढ़ै ज्ञानकी पोत ६१ कृपण कहा जो धननहीं दाताको बिनुदान ॥ सत्य कहा जो मृषानहिं को पंडितबिनुज्ञान ६२ कुसमय में हितु शत्रु सम अंबुज नाशत भान ॥ जलबिन ग्रीषम काल में सर त्यागत कुलवान ६३ मित्रन कुसमय ॥ होत कोउ दधि अगस्त्य ते जानु ॥ मंगल तजि परमातमा तूकरु ताकर ध्यानु ६४ समय समय की मित्रता बिनुस्वारथ जगनाहिं ॥ तज्यो बिभीषण बंधुहित राम

हितहिं चितचाहि ६५ मातपिताकी प्रीतिअति निजबालक से
सत्य ॥ मृगिनी सुततजि भगिगई वृकलखि जानिबिपत्य ६६
मलयुत अमलनहोतजग कौनौवस्तुप्रवीन ॥ तिमिअनुभव बि-
षयीबिबश होतउदय कबहीन ६७ यथाअगरकीगंधिको जानन
भीलकिरात ॥ तिमिमूरुखके संगते गुणनागर पछितात ६८हठ
मतजे निजउरधरेपाखंडीछलकारि॥ तेनलखत सर्बांगमत मंगल
दीरबबिचारि ६६ प्रीतिसहय पारसबिमल हाटक कर्त्तालोह ॥
नामरूपमें भेदभोनृपभीअनसौंलोह ७० समरसाधना ब्रतकठि-
नकरब सहज मतमोर ॥ प्रीति एकरस अंतलगि करबनिबाह
कठोर ७१ मोलबिना बिकिजायजो मित्रहाथनरकोइ॥ऊंचनीच
दूनोंतजै प्रीतिनिबाहक सोइ ७२ प्रेमनिबाहबप्रणकठिन भाषत
कबितासर्ब्ब ॥ आदिअंत जोनरकरै यकरस धनिबिनुगर्ब्ब ७३
जोरजप्रीति बँधायनिज मित्रध्यानमें लीन ॥ सोनर मंगलधन्य
है भाषत सकलप्रवीन ७४ राधापतिकेनेहमें लीनरहै दिनराति॥
मंगल प्रीतिप्रतापसों भक्त मुकहु जाति ७५याजगमें लखिपरत
नहिं सुपुरुष खलसबआहि ॥ तूमंगल मिलुसबनकी आपुआपु
दरणाहि ७६ निजसमता जनिमानकउ सबहि जानुपदवान ॥
अहंकारको भावतजि भजिले हरिबिज्ञान ७७ बारनकीजे हरि
भजन इंद्रीबशमें लाउ ॥ याजग मंगल बहुरितू कहांपाउ अस
दाउ ७८ करणीलों दाताबिदित सुखदुखदायहिलोक॥ अधऊर-
ध निजकर्मबश भ्रमत सशोकअशोक ७६ जिमिदीपककी पवन
अरि तसज्ञानहिहै मोह ॥ इंद्रीनिग्रह ओटपट करुप्रकाश बितु
छोह ८० जलबैरी जिमिअग्निको यद्यपि तापितुसोइ ॥ तिमि
बैरी विज्ञानमल यद्यपितातेहोइ ८१ जिमि अकाशमें भासकृत
दिनमणि देवसनेम ॥ तथा ज्ञान उरनभ उदय होत जीवकह
क्षेम८२ बामनमानत बाममत योगसिद्ध करि दीन ॥ कोकबि
मंगल भणिसकत खलमति सदामलीन ८३ मूढ़कहत चलिदि-
वसकछु हरिभजिहै चितलाय ॥ कोजानै मंगलचतुर कालबीच-

हीखाय ८४ वर्ण गर्व बियागरब उरबासीभा जासु ॥ धर्मकर्म खोवतसकल देतनरकमेंबासु ८५ निरत दिवसनिशिबिषयहित हरिहित घटीनएक॥ करोंसख मंगलपाइहैं गहेबिषयकीटेक ८६ बालदशामें शुद्धिकरि मनहिं भजनमेंलाउ ॥ निबहे तीनोंकाल के पदनिर्बाणहिं पाउ ८७ जेभूले निजआतमा औरधर्मकोभाव॥ तेनहिं जन्मसहस्रलगि मुक्तहोत श्रुतिगाव ८८अध्यातम बिद्या गुणै साधारणमत साधि ॥ जगमें कैसेहुबिधिरहै ताहि न यमकी ब्याधि ८९ मंगलबनतन कर्मशुभ तृष्णाके बशकोय ॥ समुझावै गुरु कोटिबिधि तदपिन मानैसोय ९० पीछेदिन खोयेघने आगे देहैं खोय ॥ मंगलमनकी चालिलखि मनमें दीन्होरोय ९१ कोटि भांतिशिक्षादई मनपापीको सांचु। तदपि दुष्ट बश लालसा नाचत बिषयीनाचु ९२ ज्योंनहिं भेदत कंजदल कौनोबिधिकीलाल ॥ त्यों शिषमेरी दुष्टमन तूनगही किहुंकाल ९३ अबते मेरी कहीसुनि तजि बिषयनकोबाद।।गाउ सुकीरति श्यामकीउरधरि सुंदरपाद ९४ जासुनामके भेदते नर तरिजात अभेद ॥ मंगल मन निजध्यानधरु तजिदे सबजगखेद ९५ सतमारग सतसंग करु आतमको अपनाय ॥ कयोंशोचत मनमूढ़तू आशुमुक्तह्वै- जाय ९६ मंगलमन नहिंमानिहै बिनुबांधेरजज्ञान ॥ यहउपदेश प्रमाणिका सोकिनकरै सुजान ९७ दशद्वारेजो प्रकट हैं तिनहिं बंदकरिदेह ॥ मनमारग पावैनहीं तब सतकरै सनेह ९८ इड़ा पिंगला सुषमना याशरीर कुतवार ॥ सबहित्यागि करु प्रीति दृढ़ तिनसों ज्ञान बिचार ९९ मोक्ष दुवारो जीव को सुषमन उदयप्रधान ॥ मंगलके मतप्रायत्यहिभजिलेश्रीभगवान १०० ॥

इतिश्रीमत्सकलश्रज्ञानह्नर्त्र्यां सर्वांगसुबुद्धिकर्त्र्यांमंगलबिनोदकार्यांमंगल दासबिरचितायांज्ञानोपदेशनिर्बाणपदबर्णनोनामसप्तमश्शतकः७ ॥

दो० ॥ गगन अनिलजल अनलमहि पंचतत्त्वकृतलोक ॥ सो व्यापतयह श्वासमहँ जानतहोय बिशोक १ जानेतेदृढ़ता लहत सुनेबोधनहिंज्ञान॥ भोजनबिन खायेमिटत क्षुधानकोटिसयान २

श्वासाको सबख्यालहै तीनिलोक तिहुंकाल ॥ ताहिलखै बुध दृष्टिसों लहैमोक्ष नरबाल ३ गुरुकर्ता सतसंगते मोक्षलहत बिन भेद ॥ यथाश्राग्र उष्णताबश तनते चलतप्रसेद ४ कर्मकिये ते कामनाकोनकरै बुधिमान ॥ इच्छावत फलकोलहै परिपूरण कल्यान ५ श्रासन श्रमित कहेश्रहैं शंकरमारगयोग ॥ पद्मसिद्धि उत्तमहुवो करत शरीरनिरोग ६ प्रणवमंत्रको जानिकर प्राणायाम सदाहि ॥ आयुबढ़ै अघगणनशै श्रंतबसै पदमाहि ७ श्राशारखै मोक्षकी बिषय बासनात्यागि ॥ सुखमनमारग हरिभजै रहैमोक्ष तटलागि ८ बावनतनु नभक्योंछुवै श्रंधलखै सुखरूप ॥ दूनोंश्रातम ध्यानबश यह सिद्धांत अनूप ९ पंगुचढ्यो श्राकाशलौं श्रति श्रचरजकीबात ॥ जानेते कछुभ्रमनहीं मूरख मनपछितात १० बातनसे मुनिसमबने दंभगलित मनजान ॥तेपाखण्डीकौनबिधि पावैंगे कल्यान ११ दीनबसन बिनशिशिरमें ज्योंनिरखत दिन नाथ ॥ त्योंश्राशाकरि ब्रह्मकी जगनरहोयँ सनाथ १२ तृषावन्त जल बिकलमन खोजतकूप तड़ाग ॥ त्योंमंगल खोजहि हरिहि उदयहोय तबभाग १३ समरभूमि जिमिनृपतिमन निजजयकी श्रभिलाष ॥ तैसेमंगल मनबसै हरिपद प्रीतिश्रमाप १४बोहित बूड़तजीवज्यों भवावर्त बिनजान ॥ मंगल श्रबतौ कठिन श्रति राखिहि श्रीभगवान १५ मधुमाखी मधुकृत श्रमित भखनकूपशतावश्य॥ कोलछीनि लियदुखभयो तसधन लोभियवश्य १६ यह सम्पति तुवसंगनहिं जन्मीसुनु मनमूढ़ ॥ श्रंतसंगिनी होत नहिं कतदुख करत श्रगूढ़ १७ परबश बन्दी भवननर यथारहत सकलेश ॥ तिमिइंद्री बशजीवयह भरमत देशबिदेश १८ ज्यों कुलाल भाजनरचै ऊंच न नीच बिचारि ॥ संगतिबश शुभश्रशुभ भोतथाजीव निरधारि १९ साधुसंग साधैमनहिं नीचसंगभ्रमखाय ॥ शुभकारी कोउजन्मनहिं संगति मूलबताय २० संगपाय चेततनहीं ऐसश्रउमहा श्रचेत ॥ श्रहिमलयज बासीकहा श्रमृत बुद्धितजिदेत २१सरितासर बापीकहौं कूपादिक जलधारि॥काम

आपनो चतुरजन सबते लेतनिकारि २२ कहाकरैलै सम्पदा जो नहिंजीवनआप॥मरणसमयरावणकुरुपधनहितकीन्हबिलाप २३ जिमिनिषंगमें शरभरे यकयक करिघटिजात ॥ तथाश्वास निज जातहै चेतुआयु नियरात २४ कामीक्योंकर चेतिहैं चढ़े उडुप निर्बुद्धि ॥ चन्द्रइंद्र दुखअतिलह्यो कामबिवश नहिंशुद्धि २५ कहानृवश्में आपने बिनपरमातमएक ॥ जन्ममरण निजबश सदा करुनिज चित्तविवेक २६ पापराशि यमराजपुर कोटि भांति पछिताय ॥ धर्मात्मा सुप्रयासबिन हरिपुरकोचलिजाय २७ क्षर अक्षरको एकसम ज्ञानीकरैबिचार ॥ नित्यअनित्य विवेकउर भव मगकरैबिचार २८ गंगाजल पावनपरम बदत बेदपौरान॥ पैनहिं मानत निकटबसि जाहिकहत अज्ञान२९ अक्षत चखनमेंअंधवत निकट बस्तु नहिंसूझ ॥ नानामतखोजतफिरैसतमारग नहिंबूझ ३० जाशोभा शोभित त्रिपुरजाआभाभवभूत ॥ मंगल मनबूझत नहींजगहिछलतजिमिभूत३१ आशापूरण होइसबबासआपनेधाम ॥परमातमा बिज्ञानमय जन्ममरण निःकाम ३२ जिमिअज बाधकलाइगृह ताहि चरावतघास॥कालन जानतमुग्धमतितिमि नरतृष्णापास ३३ पढ़ैबेद बेदांतको बिषयलीननरकोय ॥ ताहि महाबातुल कहिय दादुर वक्तासोइ३४खगनिज मुखबाणी बदत नित्य प्रातहरि नाम॥ नरमलीन भिनसारसे बिषय भजत मति बाम ३५मेरी बुधि अति बोधिनीमन चंचल चंडाल॥तासु मरण हितयतनबहु कह्योन नाश्योकाल३६मन जोमानै मत सुमतितौ मन चीता होय ॥ सत्य प्रीतिबश ईशभव वदत सयाने लोय३७ सात सात कौघातकरि गुणसोंदीजियबांटि ॥ शेषवस्तुकोखोजिलेमन् मलीनको डांटि ३८जिमिअकारबिन व्यंजनहि बोलि सकतनहिं कोय॥तिमि हरितजि प्राणीनकी मुक्तिन कैस्यहुहोय ३९ नारि आपने पतिहिजिमि सेवतिनेहसमेति ॥ अंत भस्मता प्रीतिबश होति परमगतिलेति ४० ऐसीसांची प्रीतिसँग प्रीतम के निरबाह ॥ करै साधु सों दृढ़वृतीमिलि प्रीतम सुखलाह ४१

मोह लालता त्यागिमन ध्याउ प्रेमदृढ़लाय ॥ हर्ता कर्ता आपही
त्योंमनरहा समाय ४२ मांगत लागत लाजनहिं औरनसों मन
तोहिं ॥ यांचत सांचे मित्रसों क्यों लजात कहुमोहिं ४३ जन्म
नभो प्रथमै रच्यो माता कुचपयजानु ॥ मंगल पालक सत्यहरि
सबैबिधि अनुमानु ४४ खीझत तेली तेलको क्षुधावन्त यह
पीन ॥ कौकाकी बाणी सुनै निजस्वारथ लवलीन ४५ यथा
अन्ध द्वैचारि मिलिगज चीन्हन मनकीन्ह ॥ करपद पूछरु उदर
कुंताहीसम कहिदीन्ह ४६ तथा पंथसंसार के नयनहीन अनु-
मान ॥ द्रष्टामत सर्वांगहै सो हाथी पहिंचान ४७ ज्यों कबीर
निज ग्रन्थमें बरणयो पूरण ज्ञान ॥ नानकगोरख भरथरीसर्बांगी
जगजान ४८ परख्यो पूरण तीनिबिधि अपर धारि यह ज्ञान ॥
यथा गोसाईं जी भये हरिप्रताप जगजान ४९ माणिकको जु-
प्रकाश है त्यहि न डुलावत बात ॥ तथा बचन सर्बांगको डुलिन
सकत बिख्यात ५० मंगल श्रुतिमत तीनिपुर हैपरमातमबास॥
चन्द्रसूर आदिक उडुपतासुतेज परकास ५१ लिप्त होतनहिं
गगनजिमि मिला सबनमें देखु ॥ ऐसेतनतनब्रह्म बुधज्ञानचक्षु
उरलेखु ५२ शाखा दलफल फूल अरु मूल बिदिततरुनाम ॥
तिमिजल थलनभचर अखिल कहिय ब्रह्म परिणाम ५३ कौन
बिचारत ब्रह्मपद पै नहिं पावतजानि ॥ जिमि पक्षी नभ अन्त
हित चढ़त स्वबल अनुमानि ५४ सिन्धुपिपीलन गाहिया कौनौ
काल सुजान ॥ तिमिनब्रह्म के भेदकी जानत जीव प्रमान ५५
वाकी उपमा कौन जग जो अद्वैत अरूप ॥ उपमा बिन बूझब
कठिन कहत कबिनकेभूप ५६ कबिपुंगव व्यासादि जे आगम
भाखी आन ॥ सोपि ब्रह्मके भावको भेद न करयो बखान ५७
पांचतत्त्वकरि मूढ़मन यह शरीर रचिदीन ॥ तामेंआपनबिम्ब
को बासकृपानिधिकीन ५८ तू उपज्यो सर्बांगमन पंचतत्त्वके
जानु ॥ आनपंच अरु बीसगति सोपिकरी निरमानु ५९ अस्थि
मांसत्वक रोमअरुनाड़ी प्रकृति ये पांच ॥ धरा तत्त्वके योग ते

तनु उपजी यह सांच ६० रेतपित्त अरुस्वेद पुनिरुधिर लार ग्रर भाव ॥ नीरतत्त्वकरि प्रकटभे जानत ज्ञानस्वभाव ६१ क्षुधातृषा मुख क्रान्ति पुनि आलस निद्रा जोय ॥ मंगल अध्यातम बदत निखिते प्रकटी सोय ६२ धावनि कूदनि चलनि पुनि जानु पसार सकोच ॥ सतमारग ज्ञाता बदत पवन तत्त्वकोरोच ६३ शीशकण्ठ उर उदरकटिये नभजातबिचारि ॥ पंचबिंश येप्रकृति हैं कह मंगल निरधारि ६४ ये सिगरी एकत्रकरि ममहिं बुद्धि सँगडारु ॥ मंगल जगसामर्थ्य तू वृथाजन्म यह हारु ६५ जाके नयननमेंलगे प्रीतम नयनकेबान ॥ ताहि न भावत मीततजि कहतज्ञान बिज्ञान ६६ मनमें ध्यावत इष्टप्रिय तनुते बिनवत ताहि॥सत्यप्रीतिकी रीतियह कहतनीति अवगाहि ६७ सतमत सों ध्यावै हरिहि परिहरि कपट समाज॥मंगल मतसिद्धान्तके लहै स्वपदको राज६८बसतसदा बैकुण्ठमें नारायणपदध्यानि॥ दोषशोकते रहितसुगुतजत गुणागुणखानि ६९ अपरभावनात्यागि मनभजु श्रीरामकृपाल ॥ जीवतसुखपावै घने अन्तमिटै जंजाल ७० जानबिनहरि नाममत ब्रतअर्चा फलकौन॥मंगल अन्धनरूप लखरहतसंग नितजौन७१बावरमतिको होसिजनि सुनुप्रबीणम तिमोरि॥ अबकी फूटीहोहिनहिं जगअंजन करजोरि७२यथामोतियाबिन्दुजगमयननअछतलखात ॥ तिमिघेरे मायामनहिंकहां ब्रह्म दरशात७३ मायाबिन परमातमहिं जानिसकतनहिं कोइ। ज्योंबिन आतप भूषणहिं क्योंदरशै भवलोइ ७४ मायानाशत नशतजग रहतन खानिअपार ॥ पांचतीनिबिन जीवको ब्रह्महिं जाननहार ७५ मोहपाट बुधिचषदये जीवभ्रमत चहुंखानि ॥ यथा वृषभ कोल्हूचलत पूरबमग नहिंजानि ७६ कूकुरको शतबार जोदुरिआवै भषदानि ॥ तदपिन त्यागैद्वारत्यहि देखुचित्तअनुमानि ७७नारायणत्यहिपालियो आदिअन्तलगिजान ॥ तूमहिं सेवत द्वारत्यहि यहिते उत्तमश्वान ७८ कूकुर नरते पूतहै जोन भजै भगवान ॥ जन्मोमूत्र प्रतापसों ताकुगन्धि वशजान ७९

बानी जानी बेदकी प्रानी नरतनुपाय॥ तदपि कुकर्महिं नित
चहत क्यों कहिये समुझाय ८० ज्ञान बतावत आन को आप
बिषयमेंलीन॥ दीपक करसूझतनहीं पावत बाट प्रबीन ८१
तीनिकालतजि दुचितई मनधरिले ममध्यान॥ आनकर्म सों
काजनहिं यह अति उत्तमज्ञान ८२ मालव में अतिअन्नहै मरु में
रेत महान॥ एकबातमें द्वौ बड़े त्यों सुजान अज्ञान ८३ नींब
कीटतरु इक्षु कटु भाषतप्रकृति प्रताप॥ तिमिपापी शुभकर्मको
कहत कुटिल सहदाप ८४ जल बिनसर गुण बिन चतुर साधु
बिनासंतोष॥ ज्ञानीबिन आतम भजन जनुरीतोनृपकोष ८५
जोनबिचारत सुकृत अघलीन आतमानित्त॥ परमातमकोकर्म
निज अर्पतनेम निमित्त ८६ मानी मानन परिहरतज्ञानीज्ञानन
त्याग॥ दुर्योधन सुतधर्मलो नीके दुवौ विभाग ८७ नीलबरण
धोये छुटै कैस्यहुनहिं बिधिकोटि॥ तथप्रकृतियहजीवकी गहे
छोटि मतिमोटि८८यथाश्वेत मणि रंगबिन सोहत रंगहिपाय॥
तथा जीवकीहै दशासोहत संगप्रभाय ८९ भावित नृपभूषण
नहीं दीननरन संसार॥ तिमिअज्ञानीके हृदय ज्ञानन शोभा
कार ९० व्यापिरहा भरिपूरहै चौदह लोकन आप॥ मंगलमन
चेततनहीं चहुंदिशि प्रकट प्रताप ९१ हरमानत जगनरनकोजे
नहिं जीवनदानि॥ अभयईयाते भजनबिन करत मूलकी हानि
९२ बादि गमावत आपनिज चिंताविषयशरीर॥ कै आतमभजु
मोहतजि कैभजिले यदुबीर ९३ सगुण सुलभ निर्गुणसुगम सत्य
प्रीतिलेजान॥ दुबिधामें दूनौ कठिन यहमन ज्ञान प्रमान ९४
मैं आपनि दिषिकीसबिधि समुझायोंमनज्ञान॥ तूमोच्यो फिरि
पापमग अतिमूरख अज्ञान ९५ जोतूमम कहनीकरै तजिदेआन
बिचार॥ भजिले निजआतम सदासोहं पदहिपुकार ९६ ओं-
कारलव लायकरि प्राणायामसनेम॥ क्यों भरमै भवकी गली
छायरहे पुरप्रेम ९७ पूरक कुंभक रेचके नितक्रिनसाधततात॥
अजपाजप निजमनगुणौ मुक्तिद्वारबिख्यात ९८ योगी संन्यासी

गुणी मुनि सुजान कृतएह ॥ जीवत पावत मोदभल हरिपुर त्यागतदेह ९९ अनहदध्वनि बाजाबजत गगन गुफामें हेरु ॥ मंगलजाके सुनतही मिटैजन्मकोफेरु १०० ॥

इतिश्रीमत्सकलअज्ञानहर्तायांसर्वांगसुबुद्धिकर्तायां मंगलबिनोदकायांमंगलदासबिरचितायांज्ञानोपदेशनिर्वाणपदवर्णनोनामअष्टमश्शतकः ८ ॥

दो० जोपैमंगल बिमलमति तौ जनुज्ञानप्रकाश ॥ अनुभवबुधिधिरसों उदितप्रभु सूझैचहुंआश १ जो सेवन निर्बाणपदबनि नपरै मनमोर ॥ तौतूभजु यदुनाथ पद होइ परम गति तोर२ कश्यप अदिति सुप्रथमही तप कीन्ह्यो प्रभु जानि ॥ बरमांग्यो तपसिद्धिभे होहुपुत्र मम आनि ३ निजनिबंधके हेत अरुसुनि सुर बिनय कृपाल॥जन्म्यो मथुरामें स्वबश भजुतापदत्रैकाल४ जासुकृपाबंधनमुच्यौसबपहिरे गेसोय ॥ तूमंगलताकमलपदभजु सब दुबिधाखोय५ यमुनाबाहपयाबभो हूंकसुनततत्काल॥गयेपारवसुदेवलैनंदाउयउत्ताल ६ ज्ञानभेदनरनारिनहिं प्रभुमाया बश तात ॥ मंगलबिनध्यायेहरिहियमपुर जड़पछितात७जन्मकालते अल्पदिनबीतपूतनाध्यायि॥ जानिभ्रमतमंगलकहा तायश रहाप्रकाशि८शकटासुर कागासुरहि बध्योजानिखलआप ॥ मंगलभजि श्रीकृष्णपदमेटुतीनिबिधिताप९ दधिमाखन भक्षणकियोकौतुक निधि परधाम॥ तासुचरण ध्यावतमिटत जराजन्मपरिणाम१० यमलार्जुनमोचनकियो नारदशापबिचारि॥ मंगल ध्यावततासु पद जातयमपुरहिहारि ११ नंदग्राम बसिअघासुर बध्योबकादि कराल ॥ निजदासन हितबिदितभवमंगल भजुनँदलाल १२गोबरधन पूजनकियो सुरपति मान निहान॥ कौतुकनिधि राधारमण अति उत्तमताध्यान१३ कालीमद मर्दनकर्‌यो रमणकद्वीप पठाव ॥ मंगलकहु ताचरणभजि क्यहिन ऊंच पदपाव १४ रास कियो नारिनसहित अकथ कृपानिधि श्याम ॥ रसिकनाथके भजनते मुक्तिलहै परिणाम १५ केशीव्योमादिकबधे निजजनके दुखदानि ॥ लाभमहाहरि पदभजे मंगलभूलेहानि १६ मथुरागे

अक्रूरसँगरजक दुष्टबधकीन्ह ॥ मंगल हरिअतिसरलगतिनीचहि
निजपुरदीन्ह १७ लूली कुबरी नेहकरि चंदन अरप्यो आनि ॥
कीन्ह्योशुद्ध स्वरूपप्रभु प्रीतिसत्यपहिंचानि १८ धनुभंज्यो गज
बळमथ्यो मार्यो प्रबलचखूर ॥ परमातम श्रीश्यामजू जासुअंश
शशिशूर १९ कंसदुष्ट दुखदानिजग मर्ख्योस्वकर कृपाल॥ मंगल
मोहनदाससहितु परिपूरणत्रैकाल २० सत्रहबार जरानिधिहि की-
न्ह पराजयश्याम ॥ भारउतार्यो भूमिको यशपूर्योत्रैधाम २१
कालयवनको मारियो सोवत भूपजगाय ॥ मुक्तिदई मुचुकुंदको
भजसिनत्यहिचितलाय २२ मथुरातजि द्वारावती बसिकीन्हे
बहुख्याल ॥ सोबरणत पोथीबढ़ै भजुमन मदन गुपाल २३
जिमिबिधवा करि कुकृतपुनि गर्भरहे पछिताय ॥ तिमिमंगल तू
बिषयरत अंततोहिं दुखदाय २४ बाम प्रकृतितजि श्यामभजु
कामकला बिनुसत्य॥मुक्तिहोइ संशयनहीं नाशैजगतबिपत्य२५
राधाबरको मनुजसम जानत नरचंडाल ॥ तेपछितैहैं शमनपुर
यथा नीचशिशुपाल २६ निष्ठाशुद्ध लगायकरि मनविशिष्ट करि
ध्याउ ॥ मंगल हरिपद प्रीतिसों अंतमुक्ति पदपाउ २७ श्याम
श्याम हरिरामकहु भाय कुभाय बिहाय ॥ कोटियज्ञ फलकोलहै
मंगल कहत बुझाय २८ श्रीहरिनाम प्रतापते मिटत पापकीखा-
नि ॥ यथाकाष्ठ तृणव्यूहकी रंचकलिखिकृतहानि २९ आनआश
तजि मीतमन आतम श्यामहिंध्याउ ॥ क्योंयहिझूठे स्वांगमेंआ-
यु अमोल गनाउ३० कोटिजन्म जपतपकियेछलप्रपंचयुतदंभ।।
सिद्धिलहै नहिंमोक्षकी बारुभीति कृतथंभ ३१ मानि प्रतीतिस-
प्रीतिमन बासुदेव गुणगाउ ॥ प्रीतिविवश हरि सर्बदा भणतबिबु-
धं कबिराउ ३२ दुखसुख काल अकालमें नेहएक रसराखु ॥भक्ति
बिबश श्रीश्यामजू तादाया भवनाखु ३३ कपटछुरीकरमेंलिये
छेदत अजबिज्ञान ॥ मंगलऊपर साधुवत क्योंपावै कल्यान ३४
प्रातसमय निर्व्याजमन ध्याउरमाकोकंत ॥ जीवत सुखसंपति
अमित लहैमोक्ष पदअंत ३५ अनख आलसहु खोजिअरु रीझिभजै

घनश्याम ॥ मंगल प्रापक मुक्तिको जापक संयुतबाम ३६
आनओरहेरैनहीं तजिनिज मीत सुजान ॥ जिमिचकोर शशिको
लखत सोपावन गुणवान ३७ रटैनिरंतर श्यामपद ध्यानसनेमुर
राखि ॥ भुक्तिमुक्ति दोनोंलहै देतउपनिषदसाखि ३८ कालसुचक्र
कुलालको घटसम जीवअपार ॥ भरमावतबिधिकोटिपुनिउपजा-
वतसंसार३६ जानरकी सेवाकरतबेतनसोदैदेत॥नारायणपदध्या-
नसों कोय अखिणकिनलेत ४० जिमि पषाणकी यानचढ़ि पार
सरितकोजाय ॥ तिमि नरकीसेवा निफल मंगलकहत बुझाय ४१
जोन सम्हारत आपकहँ भारसोथांभकिआन ॥ मंगलकरणीनरक
की तूकृत आनहिंज्ञान ४२ प्रथम आपको लिद्धकरु तब औरन
लिखदेह ॥ जगतबड़ाई मुक्तिदा नहिं हरिपदभजि लेह ४३ काल
कूट करणीअमृत क्यों करिहै अज्ञान ॥ तिमिपापी किमि सुकृत
को निजउर लावैध्यान ४४ तेलसनेही तिलनको तेलीपेरि नि-
कार ॥ देखुमित्रता कठिनप्रण जीवत संगनहार ४५ लाली नेही
मिहदिदल काहुइपरी नदेखि ॥ बांटिनिकारी कोटिबिधि तदपि
परी नहिंपेखि ४६ मित्रमृतकके संगही नरतनुलोन्ह्यो लेसि ॥
मित्रद्रोह उरधारि स्यहिं तनुमें गई प्रबेसि ४७ प्रीति यथा शशि
सिंधुकी पूरणलखि उमड़ात॥ मंगल ऐसीप्रीतिदृढ़ करुक्यों मन
पछितात ४८ जानि श्यामपदनहिंभजत वृथा दादुरीवाद ॥ मं-
गलयमपुर बिबिध बिधि जीवहिहोय बिपाद४६कहा सुदामाने
कियोपायो हाटकधाम ॥ प्रीतिप्रतापहिबिदितभव हरिभजु मन
बसुयाम ५० अर्जुनको स्वारथकियो कास्वारथ यदुनाथ ॥ प्रीति
बश्य त्रैकालप्रभु यहै ज्ञानकी गाथ ५१ द्रुपदीको कर्तबकर्योबा-
ढ़चोबसन अनंत॥मंगल महिमा प्रीतिकी जानतकोबिदसंत ५२
कोपौरुष किय भारही गिरचोघंट हहराय ॥बचे तनयदल अमि-
तते अल्पप्रीतिके भाय ५३दंभीपापी अपकृती अज्ञानी चंडाल॥
नामलेत बिन भावदृढ़ नहिंरीझत गोपाल ५४ को पांडवके बल
रहे लक्षनिकेत कुठाम ॥ प्रीतिबिबश उबरेसकल शिखि भषिमे

घनश्याम ५५ बिकल रुक्मिणी व्याहदिन लैआये जगजान ॥ प्रीतिसत्य अनुमानिहरि खलदल बधि मनमान ५६ बाणासुर को मानमथि लीन्ह्यो अनिरुध व्याहि ॥ मानहरत संसारको तू मन मानहिंचाहि ५७ दुर्योधन आज्ञातजी दीन्ह्यो धंमनधाय ॥ मूरुख हरिआयसु तजत पूजत प्रेतनजाय ५८श्याम श्याम पुनि श्यामकहु राम राम कहुराम ॥ भटकत क्यों भवमें फिरत बिन मांगे लहुदाम ५९ पेटखलाये जगफिरत मतिहीनो नहिंबूझ ॥ राधाबल्लभ भजनसों मिटैबिपति स्वहिंसूझ ६० काल कर्मको नाशकर दाता जनआनंद ॥ कोहूसर मतधर्मके त्यागिनखत यदु चंद ६१ कोटिआपदा नामसुनि मंगल जातपराय ॥ यथाकेहरी नामसुनि बनचरव्यूहलुकाय ६२ सहसभांतिके बिघ्नअघ हरियश सुनि नशिजात॥ जिमिदिनमणिके उदयते नभद्युतिमान छिपात ६३ श्यामशब्द सुनिकँपिउठै मृत्युकालयमदूत ॥ पुंडरीकसुनि करिबिपुल जिमिशंकत बिपुपूत ६४ श्रीराधाबर नामको जपत जो हितचितलाय ॥ शिव आदिक सुर जयबदत तानरकी मुद पाय ६५अमर सराहत मनुजबपु श्यामभक्ति दृढ़ज्ञान ॥ मंगल तू नरतन लहो भजुहरि धरिशुभध्यान ६६ उड़तश्याम कहत-हिअमित दोषकुकर्म सशंक॥ शब्दभुशुंडी सुनियथा भाजतकाक-अशंक ६७ गेहतजत पाखंडभ्रम श्यामशब्द सुनितात॥ चंडपवन तण उड़तजिमि निजथल पुनि न लखात ६८ बारबार शिक्षा करत ज्ञानीध्यानी साधु ॥ अपरमूलतजि सर्बथा श्रीहरिपदआरा-धु ६९ बढ़त सकल आनंदसुख भजतश्याम भवमाहिं ॥ जिमि राका शशि सिंधुलखि कृतप्रबाह भ्रमनाहिं ७० संपति तरुजल भक्तिजग नारायणकी मीत ॥शाखाबाढ़त नित्तनित भजुहरिसदा अभीत ७१ सकल सिद्धिता ढिगबसै जोध्यावै नँदलाल ॥ जिमि सबु पावसकालको मिलत सिंधुकीलाल ७२ आदरशड़पदमान-ता ताचेरीह्वै जात ॥ कूकुर ज्यों निज स्वामि सँग जोध्यावै यदु जात ७३ सबके उरमें प्रीति तेहि बसत जो ध्यावत श्याम ॥

पूषण जैसे शरद ऋतु सब चाहत निजधाम ७४ बालक की
बाणी यथा मीठी कटुवति लागि ॥ श्यामभक्तकी बारता सुनत
बिबुध अनुरागि ७५ जापै मानैतौ कहौ जो भंजक तुवमान ॥ जा-
निदुष्ट पुनि मीत मम जाहन तेहि अस्थान ७६ मेरी भाई होत
नहिं नत त्यागतमनमोह ॥ श्यामश्याम श्यामा कहत त्यागि अ-
खिल छलछोह ७७ को तजि श्यामा श्यामपद पूजै भूतनजाय॥
नरकबासको भ्रमहृदय अंतकपुर पछिताय ७८ मेरेमत श्रीश्याम
पद पारसके पितुआहिं ॥ अंत आपु समहीकरत बदतबेद भ्रम
नाहिं ७९ हांक सुनत हनुमानकी कम्पत ज्यों खलजाल ॥राधा
मोहन नामसुनि तिमिकँप पापकराल ८० बामाबाम बिचारिये
धामाधाम सराहि ॥ नामानाम प्रबीणको यहसोचिय जियमां-
हि ८१ पाठक मूरुख मौनको कष्टानंदप्रमान ॥काठवृक्षको भेद
है जानत पर सुजान ८२ ज्ञाताज्ञाता जानिये दातादातासोइ ॥
श्रामिकमत क्यों बूझिये परिपूरणहरि होइ ८३ प्रभुआज्ञा थिर
मानिकै अर्जुनमंड्यो युद्ध ॥ जयपाई आनँदभयो सुन्यो सुमारग
शुद्ध ८४ आनओरते भूलतजि शत्रुसंगदे त्यागि ॥ मित्र आतमा
आपनी ताहीसों रहुलागि ८५ बिष्णुलोकमें ध्वंतभो जन्मत श्री
यदुराय ॥ परिपूरण अवतारशुचि बद्योव्यासमुनिराय ८६ सगु-
णरूप सुंदरबपुष सुखदायक तिहुंकाल ॥ श्याम कृपानिधि दास
हित नाशक जगजंजाल ८७ मारुमारु लावतभगत दलबिबेक
बिनुत्रान ॥ बर्मश्यामको नामकरु कामप्रबलता भान ८८ गज
बाहन रथ द्रव्यगृह संपतिलखि मनभूल ॥ ध्यावतनहिं यदुनाथ
पद अंतशमनकर शूल ८९ मातपिता त्रियबंधुसुत सखासुसेवक
कोटि ॥ अन्तसंगनहिं देहहू समुझतनहिं बुधिछोटि ९० नीचन
त्यागत नीचता कोटिभांति सिखदीन्ह ॥ यथानकटुता नीमतजि
चंदनको संगकीन्ह ९१ जाकीप्रकृति प्रदोषमय सो नचहत हरि
ज्ञान ॥ जिमि उलूक भागतबिकल उदयहोतही भान ९२ मन
प्रबोध आवतनहीं बिनुजाने गुणश्याम ॥ मंगल सांची मनकही

ध्याउश्याम पुनि राम ६३ कौड़ीके दानीनहीं निंदत बलिकरणाहि ॥ मंगलतू सुनि सीखमम भजुहरि निज चित चाहि ६४ जयजय ध्वनि चहुंओरहै सतमारगकी मीत ॥ ताहित्यागि क्यों दुष्टमन तूभरमत बिपरीत ६५ पारावारन चारिदिशि आतम अकल प्रकाश ॥ प्रफुलित मनभा ताहिलखि पायो शुद्धबिलास ६६ दिवसनिशा कछुहैनहीं महि अकाश के बीच ॥ आदिअंत यकराशिमय को भ्रमरहा नगीच ६७ अबतो पूरण मतिभई पूरणपदको जानि ॥ क्योंभूलै मंगलचतुर करणी तरणीमानि ६८ कोटिजन्मको फलमिल्यो राधाबल्लभनेह ॥ अबनचाहकोउ मन रही मुक्तिलहौं तजिदेह ६९ मुक्तिपदारथ करलगै युक्तिध्यान निर्व्याज ॥ मंगलकी शिक्षासुधा सुनिभजु.मनब्रजराज १०० ॥

इतिश्रीमत्सकलअज्ञानहर्त्तायांसर्वांगसुबुद्धिकर्त्तायां मंगलबिनोदकायांमंगलदासबिरचितायांसगुणपच्चनिर्वाणबर्णनोनामनवमश्शतकः ॥ ९ ॥

दो० ॥ सर्बसिद्धिमय सिद्धियह मंगलदीख बिचारि ॥ भगवद्भजन बिहूनमन अमितजन्मकी हारि १ सबधर्मनको धर्मयह अखिल तत्त्वको सार ॥ आराधन भगवद्भजन दया सहितव्योहार २ मदिरापान अजानज्यों त्यों कुलीन धनवान ॥ महामूढ़ चेततनहीं करतन भगवतध्यान ३ ओंकारक्षररूपहै बिरचेत्रिपुर स्वअंग ॥ कोकुलीन कुलहीन कहि यकरस बदत अभंग ४ जो बिभूति चौदहभुवन सबते परक्षररूप ॥ जापक नीचसो ब्रह्मघर ब्राह्मण भयोस्वरूप ५ प्रणवमंत्रको पाठकृत नासामग सबिबेक ॥ पूरण प्राणायामकृत जनु कृतयज्ञ अनेक ६ ध्यावत जाके मन तजत चंचलता सबभांति ॥ सोपद प्रणवभयेजगतबेदमातदिखराति ७ अजपाको कारणकठिन गेहिनको दुखनित्त ॥ पाठकजापक प्रणवकेपावतसदा सुकित्त ८ जासुअर्थते जानिहैं परमतत्त्वको भेद ॥ आपुबूझिहैं आपुमें बदतवेद बिदवेद ९ चारिऔरहैं सिद्धि मन जबलगि रामदयाल ॥ बिघ्नबिष्टि दिगशूलखग दहिनहोत

तत्काल १० मूलवहै शाखासकल बीजईशसंसार ॥ उपनावक नाशकवहै एक आपुकरतार ११ तूही मंगल भीरुभट समरकाल बिकराल ॥ ज्ञानमान अज्ञान तू दूसर नहिं त्रैकाल १२ दया आपुहिंसा तुहीनिराचार आचार ॥ ज्ञान श्रवण सुनि बाक्यमम लखु आपन व्यवहार १३ धर्माधर्म तुही चतुर मूरुख पण्डित मूढ़ ॥ ब्राह्मण क्षत्री बैश्य तू शूद्रतरुण सुतबूढ़ १४ गजबाहन को भेदहै जन्मशरीरप्रसाद ॥ तूही पूरण एकहै नहिं द्वितीयमर्याद १५ जीवईशतूहीअहै मायाछाया तूल ॥ अपनावतभागी फिरत ज्यों सरिताके कूल १६ मायाब्रह्म अदृश्यद्वौ एकन आन प्रकार ॥ जलबीची छाया बिटप भूषणस्वर्ण बिचार १७ माया शक्ति सुहावनी कीन्हे जीवबनाय ॥ बहुरिआपनेपंथकरि ब्रह्महिं दियो लखाय १८ माया के नाशेचतुर कथा कथीनहिंजाय ॥ छायाजस मध्याह्नकी इतउतनहिं दरशाय १९ जब मायाको अन्तहै तब दुबिधाकोजान ॥ छाया नाशत वृक्षकी कोधौं चतुर प्रमान २० ब्रह्मज्ञान गुड़जानिये सेवक गुंगसमान ॥ कहिनसकततास्वादको त्योंबर्णन निर्बान २१ ज्योंरहटासें शब्दहै पैनाहीं लखिजात ॥ जीवभाव भासत हृदय कहत बनतनहिं बात २२ कारण सूक्षमस्थूल त्रै बपुधारीप्रभुसोइ ॥ जानत अध्यातमचतुर त्रैपदलेत बिलोइ २३ तीनिबपुष ज्योंईशके सोहतहै बिज्ञान ॥ तिमित्रैतन याजीवके सततमभेद सुजान २४ ईशसतोगुणपूरहै जीवतमोगुणलीन ॥ उत्पतिकाया कर्ममें समतायहै प्रबीन २५ ब्रह्मजीवएकै दुवौनयन दृष्टिनहिं दोय॥दृष्टिहोतहै नेत्रते ताबिन लखतन कोय२६सुरदेवभाषितजगतअन्धनिरन्ध प्रमान॥व्यापकअब्यय अजप्रभूईशजीव है थान २७ जीवअहैपरमातमा जानत वेद बिचार ॥ बुन्द सिन्धुमें भ्रम कहा जलएकै निरधार २८ खोजत भूली बस्तुको दीपक तमनहिं प्रकाशि ॥ जोपै दृष्टिहिहोइ नहिं को रथ दीपकराशि २९ माया बश भरमत फिरत ऊरध अधबिनज्ञान ॥ जोपैचीन्हे आपुपद फिरिन भ्रमै बुधिवान ३०

प्रीति एकरस इवासमधि राखैज्ञानीकोय ॥ तत्त्वदरश पावैसही ब्रह्मलीन पुनिहोइ ३१ भेदन जानो आपनो मूरुखकर्त्तबलाख ॥ जाना चाहत ईश्वरहि अन्धदृष्टि अभिलाख ३२ पूजतआपन देवता सुधि आई जगकाज ॥ बिकल शीघ्रपूजनकरत कबरीझैं सुरराज ३३ जब लगि पूजनकरिचुकैं तबलगि पाननीर ॥ तृषा लालसा उरलगी पूजन वृथा अधीर ३४ तुलसी तरुमाला गले बांधे शालग्राम ॥ कपटहृदय परतिय रमत भक्त कहावत नाम ३५ नीचपायकलिआपुको कहतकुलीनसनेम ॥ मंगलतू चुप साधु किन करिघर हरिपदनेम ३६ जिनहिं नहीं अधिकार है यज्ञसूत्रधर कन्ध ॥ मंगल अब मर्य्यादको अन्यायीकुप्रबंध ३७ चंदन तिलकदिये फिरत कोलभीलकलवार ॥ तेलीधोबी मीनहा पछितैहैं यमद्वार ३८ गेहधर्ममहँकीजियेत्यागिधर्मछल त्यागि ॥ कुलकरणी छोड़त चतुर चलत भलाई भागि ३९ बूझि जाइजो आतमा तौ ब्रह्मण ह्वै जाय ॥ पुनिनहिं पूछैज्ञातिको संत समाज सुहाय ४० ब्रह्म ज्ञानको प्राप्तभे नीचन ऊंच लखाय ॥ समताको उरबास शुचि मन भावितभष खाइ ४१ दंभकपटयुत गेह रत तबलगिकर कुलकानि ॥ जब बिबेक समता मिलै तब न बर्ण कुलवानि ४२ व्यास वेदयहिं हेतही कीन्हे बरणबिभाग संतवरण दूसर रहा परमहंस अनुराग ४३ बिद्या चौदहजानि के रतभो बिषय बिलास ॥ ताते मूरुखही भलो जोन धर्ममग पास ४४ जानि जौहरी परिहरै हीरा काननबीच ॥ ताहिकहिय तृणको बणिक परखनतासु नगीच ४५ जेसपूत सांचे जगतगहे बेद मर्याद ॥ ते आदर कृतगुणिनके मूरुखसंग बिषाद ४६ काग श्वानको पालियो सुंदरभोज्य भषाय ॥ तदपिलालसा मांसकी तिमि नरनीच सदाय ४७ शिक्षाकीन्ही ज्ञानकी दिक्षाप्रणवसुध्यान ॥ तदपि नीच निजबरणसम भौन ऊंचपदमान ४८ अहंकारथोरेकरत मंगलनरकुलहीन ॥ प्रावृटके नारेयथा बाटनदेतप्रवीन ४९ ज्ञानवान लहिब्रह्ममत आपुहिदेत दुराय ॥ चलतचालि

पूरुबसरस ज्यों समुद्रके भाय ५० आनन आपन मगबदत शिष्य समाज अपार ॥ तेचाहत निज मान्यता सोनहिं हरिदरबार ५१ ब्रह्मधामको ऊंचलख भजनाभजन प्रधान ॥ करणीहीं कुलवान है करणीवत प्रस्थान ५२ वापुरमें ब्राह्मणबने क्षत्री पायेराज॥ भजेउ न पूरण ब्रह्मपद वापुर नीचसमाज ५३ पढ़िविद्या पंडित भये लिखिपोथी बहुजोरि ॥ रामभजनबिनु नीचमन कहां मुक्ति हैतोरि ५४ अबते मेरी मानिशिष लखुतू नैनपसारि ॥ पूरण ज्योतिप्रकाशहै अथ ऊरध दिशिचारि ५५ जानिन मानत नीचमन बिषयबासना ध्यान ॥ आतमको नित ध्याउजपि सोहंहंसःप्रान ५६ ज्यों अहिज्ञामत चरण निज लखतन कोऊ नैन॥ त्योंजानत यहआतमा आतमभाव सचैन ५७ बिपुलबिहंग बनमेंबसत डरत श्येनको देखि ॥तिमिलखि ब्रह्मज्ञान को इंद्रीव्यूह बिशेखि ५८ ब्रह्मवेत्ता चतुरसो जोरत ब्रह्मज्ञान॥ कोजानत ताबिन हरिहि जिमि रबिबिन नबिहान ५९ काल व्यालके मुख परयो जीव भेकके तूल ॥ बिषयभोग माखीचहत यह याकी बड़िभूल ६० वृश्चिकसुत ज्यों मातनिज भक्षिउदर बहिराति ॥ तथा जीववधि बासना ब्रह्मलीन ह्वै जाति ६१ करीयथा लखि सिंह को तजत जीवकी आश॥ तिमि देखतही ज्ञानके मोहहृदय महंनाश ६२ तीनि भांतिकी कामना सबदेहिनके गात ॥ दुबिधत्यागि यक पंथलगु यहै ज्ञानकी बात ६३ गायत्री ज्यों छंदमें सुरमधि यथा महेश ॥ सर्बज्ञानमें आतमा शोधबतथा बिशेश ६४ ज्यों भारत पौराणमें गंग नदिनके माहिं ॥ ब्रह्मज्ञान सबपंथ में त्योंशिरताज सदाहिं ६५ पातपात सींचत फिरत मूलन डारतनीर ॥ डार पात यकबारही प्रफुल्लित होहि शरीर ६६ सुकृत पाप दोनोंतजै सो ज्ञानी परमान ॥ बिननाशै सुरपुर नरक लहैन पदनिर्बान ६७ अपनीप्रीति प्रतीतिकरु साथमित्रके सांचु ॥ ध्याउ शुद्धमति आतमहिं आनरंग जनिरांचु ६८ ऐसीप्रीति सराहिये ज्यों पय पानीकेरि ॥ मिलत एकही होतद्वौ दुबरण परतन हेरि ६९ शब्द

होत आकाशमें ब्रह्मबाक्य शुभकारि ॥ ज्ञानश्रवण मंगलसुनत जातदोष सबहारि ७० जेतेबाजा जगतके बजतएक सुरसंग ॥ सुनत बनत बरणत नहीं अद्भुत सुभग प्रसंग ७१ हद्दहोत सब बस्तुकी अनहद सोन नशात ॥ मंगल यहजानेबिना यमपुर नर पछितात ७२ मारगके सरिता सरन नृपकृतसेत सुकाम ॥ तिमि ज्ञानीशिक्षाबदत अपरहेत निजठाम ७३ उदय अस्त नहिँ ज्योतिको आदिमध्य अवसान ॥ देखत ज्ञानी नैनबुधि दशदिशि एक समान ७४ मंगल अबकी कपट तजि करुहरि ध्यान सचेत ॥ मुक्तिलहै नत जन्मबहु उपजिहिकायाखेत ७५ क्षेत्रदेह यह जानिये आतमसो क्षेत्रज्ञ ॥ द्वितिय नबूझत मूढ़मति कोअबूझकी प्रज्ञ ७६ हरिमाया में जीवको नाधिकार कछु आहि ॥ जिमिन भूपके काम में कछु अधिकार प्रजाहि ७७ बल बिन उद्यम होतनहिँ पूछत कोउनबात ॥ वृद्धापनकी यह दशा मंगलमन पछितात ७८ सत्यसिंधु अव्यक्त अज अव्यय अकलअमान ॥ ज्योतिनिरीह निरंजनहिंकसन करत मनध्यान ७९ समुद बढ़त राकातिथिहिसोन बढ़त क्यहुंकाल ॥ घटतन कौनौभांतिप्रभु दाससुखदगोपाल ८० अन्नकी निबहै एकरस ममप्रणकीजिय सोइ ॥ बारंबार न भव भवँर ममभरमब प्रभु होइ ८१ परमहंस मंडल जुरेबहुज्ञानी चहुंखानि॥ पैसंगलपूंछतभयो पूरणपद अनुमानि ८२ समुझायोनव भजनबदि नवम गह्यो मनमोर ॥ अबतो आशा सबतजी हैभरोस प्रभुतोर ८३ जिमिचढ़ियानपपीलको सूझतआननथान ॥ तिमितुवशरणागत पर्यो मंगल जय भगवान ८४ सोहत कुलटा कर्म नहिँ पतिब्रताको जैस ॥ जगमंगलको श्यामतजि सबकोउ दीसततैस ८५ जय मायापति श्यामकी जयजय पालन हार ॥ दुखहरियेजन जानि प्रभु जयजयजग कर्त्तार ८६ जय सतबादी पापहा जय सुखदायक दास ॥ जयअनीह अजकाल बिनु देखहिं निजथल बास ८७ जयनिरगुण जयसगुणकी जयअजहर हरिरूप ॥ जय

विश्वंभर बिश्व बपु जय जनपाल अनूप ८८ जय अरूप जय रूपधर जय अनेक जयएक ॥ जय नरतिय जयपशु बिहँग जयजय प्रभु सबिबेक ८६ जय अनाथपतिनाथप्रभु जयप्रवीण त्रैकाल ॥ जय गायत्रीमंत्रशुचि जयबैश्यक जयबाल ६० जय अहिमहि जयपवनशिखिनभ जयजय अहँकार ॥ मंगलके दुखशोकसब हरौस्वकरकरतार ६१ जयअदेव जय देववत जयसर्बांग शिराज॥ थावर चरप्रभु एकतू जयजयजय ब्रजराज ६२ गुरुप्रताप निर्बाणपद बरण्यो मंगलमूढ़ ॥ यथाबुद्धि बिनुबकत कोउ तिमि यह बक्क अगूढ़ ६३ धीरजधरि मनमेंसदा जोध्यावैसर्बांग ॥ ताकेकुशलहि क्षेमनित होइन प्रणको भंग ६४ साधारण कबिता करीमतबिवरन निर्बान ॥ कबिपंडित हरिजन क्षम्यो खोरिजानि अज्ञान ६५ दासनकोहौं दासहौं अतिपापी छलकारि ॥ मंगल मनको मूढ़ अति कहौं सत्य निरधारि ६६ संतजानि निजसेवकरदीजै आशिर्बाद ॥ जीवत पावौं सौख्यरस अंतमुक्ति मरयाद ६७ मांगत मंगल जोरिकर नारायण सों दान ॥ भक्तिमुक्ति आनन्द पद परिपूरण बिज्ञान ६८ दासजानि राधारमण हरौ बिपतिको जाल ॥ मंगल को निज भक्तिदै कृपासिंधु गोपाल ६६ उनइस सौ तेइस गये संबत पौष सुमास ॥ कृष्ण चतुर्दशि शनौकिय पूरण पुस्तक आस १०० ॥

इतिश्रीमत्सकलअज्ञानहर्त्र्यांसर्वांगसुबुद्धिकर्त्र्यांमंगलबिनोदकायां मंगलदासबिरचितायांसगुणपचनिर्वाणशिक्षामार्गबर्णनोनाम

॥ दशमप्रशतकः ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

पाठक श्रोता ग्रंथ के गुण बिज्ञान सुजान ॥
दोनोंदिशि आनँद लहैं मिटै भूल परिमान १
रामराम पुनि रामकहि रामराम कहि राम ॥
मंगल तीनोंकालयह राखु ध्यान सुख धाम २

इति

श्रीगणेशायनमः ॥

सर्व्वसिद्धांतसप्तशतिका ॥

॥ षटपद ॥ एक दसन बरबसन बिघ्न नाशन लम्बोदर। मदन कदन सुतबदन नाग सेनापति सोदर ॥ चन्द्रभाल गुणपाल यूथनायक शुभकारी। सिद्धिधाम शुभग्राम महामंगल अधिकारी ॥भणि द्वै मातुर हेरम्ब पुनिबन्दि बिनायक कँजचरण। मंगल समोद तनमन बचन ज्ञान कथा चाहत करण १ आसन कुबलय लसत भारती सुम्मति प्रचारिनि । हंसबाहिनी सुभग शारदा कुमति निवारिनि ॥ बाग्देवतालोय बिधाताबाम बिलासिनि। सरस्वती शुचिशक्ति बाणि कबि बाणि प्रकाशिनि ॥पुनि बन्दिबाक शुचिबाक बुधध्याय गिराअघहरचरण। मंगल समोद तनमनबचन ज्ञानकथा चाहत करण २ ॥ कबित्त॥ गातको बिलोकि महि जात नाक बासकीन्ह शाल रबिलीलिकैमिटायो अभिमानहै। सिन्दुर लुकान नारि भाल तियत्याग जानिबिद्रुम समुद्र मांझ अधिक लजानहै ॥ आकर छुपान लालजाकरप्रकाश देखिहूजिय दयाल तु प्रसिद्ध खलभानहै। मंगल भरोसे कपिराज हीके हरियश गावत सहायकर एक हनुमानहै ३ ॥ सवैया ॥ आदि अनादिकहै श्रुति सज्जन पूरणरूप अरूप अयामा। धाम अधाम बिराजत आपु स्वतंत्र अकथ्य अनीह अनामा ॥ चौदह लोक प्रकाशित जो बहुभांति गुणी अगुणी अभिरामा। मंगल दीनदयाल वहै करजोरि करै पदकंजप्रणामा ४ दीन दयानिधितू परमातम वेद पुराण बदैस्मतिसाखी। पालत दास दशौ दिशिमें अति शोभनते शरणागतराखी ॥ व्यापत ताहि न मोह उपाधि जो तू पदपंकजको अभिलाखी। मंगलहूपर होहु कृपालुमनोरथ पायरहै मुदचाखी ५ लोग भनैं प्रणठानि कृपानिधि है निजदास

मनोरथदानी । वेद पुराण कवीश महामुनितेऊ बंदैं यहउत्तम बानी ॥ सोयबिचारि प्रतीतिभई उरमोरि सुनौ टुकशारँगपानी । मंगलकी मनकामता पूरिय हौ सब लायक मोमनमानी ६ देहु मनोरथ बेगि कृपानिधि सत्यमनोरथ दानि कहावौ । काहु के काजको बार न लावत क्यों ममहेतु अबार लगावौ ॥ हौंदिन राति रटौं तुव नामहिं जानतहौ पुनिकाहे भुलावौ । मंगलदीन पुकारत आरत आशु मनोरथ मोर करावौ ७ जानतहौं नहिं सगुण निर्गुणनाम प्रताप लखौं दिषिचारी । ता हित नाम बखान करौं नितजापकरौं शुचिनाम बिहारी ॥ ध्यानकरौं भलनामहिं को अरु ज्ञान गुनौं तुवनाम बिचारी । मंगलनाम गहोतुव मोहन देहु मनोरथ श्याम मुरारी ८ जौन मनोरथ लाग जबै जबतौन लखैतुवनामते पायो । कौनहुं काल निराश रहौं नहिं सत्यकहौं नहिं जात छपायो ॥ कीट मनोरथ दारुशरीर लग्यो पुनिआइ घनोभ्रमछायो । मंगल सो पुरवै करुणाकर त्यागिसबै शरणागत आयो९ को असभूति बिभूति तिहूं पुर जो न मिलै तुम्हरोयश गाये । तीनिहुंलोक बनावत पालत नाशतहौ अपनो मतपाये ॥ देहधरे न अदेहकहावतहौ सबठाम न ज्ञानगुनाये । मंगलकेर मनोरथ दीजियेहौतौ बड़ेसबभाँतिकहाये१० सातहु नाक पतालहु सातमें छाइ रही हरिनाम बड़ाई । गावत कोउ सुनावत मोद सों पावत पूरण वस्तु दृढ़ाई ॥ ताबिन भूललगै सिगरी मनहीं मनकीजिये प्रेम लगाई । मंगल मुक्ति कहावत कौनहै नाम कि चेरिरहीसतिभाई ११ याजगमें सबनामप्रकाशहै नामबिनाकछु जात न जानो । खोजिये जो कछु नामहिं केवल नाम बिना कछुमूढ़नस्यानो ॥ नामबिहायभ्रमायदशोदिशि धामनपावत ज्ञानहिरानो । मंगलनामबड़ोतिहुँलोकननामलखावत आपबिरानो १२ ब्रह्मअकारणनामबतावत ज्योतिनिरीह जोशमहिं माया । ईशअनीश कहावत नामहिं आतमभूत मुरारि अमाया ॥ शंकर शेषसुरेश गणेशहु है सबके तननामसमाया । मंगल

कारण सूक्षम थूलहु नामते तीनिप्रकार कहाया१३ सांचुबखानत निन्दकत्राजत झूंठबखान कियोनहिं जाई। तत्त्वमसीश्रुतिसामबतावतको तत्त्वं असितीनिस्वभाई॥ सन्तमहन्त कबीश्रहु कोविद त्वंपद औतत ईश लखाई। मंगलब्रह्मबदैं असितौ पुनिद्वैतरहा न अद्वैत गनाई १४ सांख्यबिचार कह्यो मुनिआदि पचीसप्रकार बिधानहिंगायो।कर्मप्रधानप्रमाणबद्यो भवजीवअपार अनादि जनायो॥ईश्वरमय जगभासिरहा बिनुईश चराचर नाहिंलखायो।मंगलयोगसमाधि बिहाय कहांलखि कारणतारणपायो१५ आदिनहीं भवकी अरु अंत न नाहिं बनावनहारबताइय। पूरुष औ प्रकृतीहिसँयोगते होतसमस्त निरस्थिरगाइय॥ भूतलनाक पतालनिवासहि देतनहीं यककर्मप्रभाइय। मंगल कर्मअकारण होत न कारणतेकिमि मुक्तिदृढ़ाइय१६ पूजतदेवन कारणपाइकै ध्यावत देवन कारणलागी। तीरथ औव्रत कारण हीन न पन्थ अपन्थ जुतापतआगी॥ देहरँगै नरकारणलागि चढ़ावतनीर सुकारणपागी। मंगलसंश्रितकारण देखत मोक्षन कारण को अनुरागी १७कोउबनो सुखियाइत डोलत कोउमहाबिपदा अधिकारी। भूपतिकोउ प्रधान चमूपति रंकअनाथबनोपदचारी॥ पण्डित कोउ बिमूढ़कुलीनमलीन कहाय प्रबीनअनारी। मंगल मोहग्रस्यो निज आतम जानतनाहिं महा अबिचारी १८ आतप को तपव्यापत काहुको शीत सतावतहै दुखभारी। भीजतपावसमें बिनुकारण भाग्यसुनावत लोग पुकारी॥ आनँदसों नित काल बितावत एककहावत दीनभिखारी। मंगल मोहग्रस्यो निजआतम जानत नाहिं महाअबिचारी १६ बांझनके यकसूनु बनावत एकमुये तन देतजिवाई। एक करामत आप दिखावत भूत पुजावत देवबिहाई॥ एक प्रबोध करावत ब्रह्मको आपनहीं मतिकीदुचिताई। मंगल संत समर्थसदा जोकरैंसो सहीमनक्यों भ्रमखाई२०वस्तु अनादि सबैजन खोजत चित्तन सूझत आपुअनादी। शुद्धस्वरूप अनूप अकाय सो तो यक तूनहिंदूसरवादी॥

भूलमिटाय गहैगरपायसों देय लखाय नहोहि बिषादी । मंगल
द्वैतबिहायन दूसर भाषतहैं मुनिहूसनकादी२१ तीरथके बशमूर-
तिकेबशहैं ब्रतकेबशमें अतिभूखे । पूजनकेबश पाठनकेबश जा-
पनकेबश बोलतरूखे ॥ ज्ञानहिंकेबश ध्यानहिंकेबश स्यानहिंके
बश बेदहिदूखे । मंगल सम्पतिकेबशमें नित आतमकेधनतेअति
खूखे २२ ऊरधबाहु करैतपएक खड़ेपदएकरहै दिनराती । एक
अधोमुख झूलन झूलत क्षीरपिये तजिअन्नअभाती॥ कंकरसेजरहै
नितएक जुकाटतआयु बिछावत पाती ।मंगलआतमज्ञान बिना
अपनेमनते यह स्वांगदिखाती२३चामकुरंग बिछायरहै यकझारि
महीपगदेत सदाहै ।प्रातउठै निजदेवलजाय चढ़ावतचावल
ज्ञानकदाहै ॥ मौनरहै यकसैनबुझावत औघड़बास सुराहि यदा
है । मंगलजानतआतमा जो नहिंतोषहु सांचहुस्वांगबदाहै २४
जागतमेंजस चेतन चेतन सोवतमें तसजागिरहाहै । इन्द्रिनके
व्यवहार अनेकनसो नलखै शुचिरूप महाहै ॥ आपहिजानत
आपबखानत दूसरकौन बिवेकलहाहै । मंगल जानेबिना भ्रम
लागत जानतज्ञानअज्ञान कहाहै २५ जीवहिकूतिनपाकहुलागत
पूरणब्रह्म प्रभापसरीहै । नीचकुलीन नहीं यह जीव कहावतमें
अहि ज्यों रसरीहै ॥ भूल बड़ी तनमान अमान कि छोड़त सो
नन पोढ़सरी है । मंगल संतसमाजबिना कउकाटिसकै न गले
फसरीहै २६ शक्ति पिपीलके अंगबहै गजते तनमें भरिपूरिरही
है । देव अदेवनमें पुनिसोय मनुष्य पतंगकी शक्तिवहीहै ॥नाग
बनस्पतिमें फिरि देखियपै दुबिधायक चित्त सहीहै । मंगलडा-
वताल नदीयक नीर न रूपहै भेदयही है २७ या तनमें इक
नित्य निरंजन सत्यअहै मुनिसंत बखानैं । बोलत डोलत सोवत
रोवत जेंवतहू निजध्यान प्रमानैं ॥ बुद्धिनहीं जुबड़ो गुणखानि
नहीं मन चंचलकी गतिसानैं । मंगल आपुहि आपुबिराजत तू
दशहू दिशिमें भ्रमठानैं २८ कौन बतावत काहि बतावत कान
लगाय सुनै पुनि कोरे । काहि चितावत कौन भ्रमावत ज्ञान न

आवत ज्ञानघटोरे ॥ जोप्रभु आपुप्रकाशिरहा न द्वितीय कहाबकि बेसन तोरे। मंगल मौनगही अपने घर जो अपने सबके घरसोरे २९ कामबशीभव भूतकिते अरुकेतन के मनक्रोध प्रजारै। लोभ लियेमन काहुको डोलत मोहकि रज्जु बँधो न सम्हारै॥ मान प्रमान हियेबश काहुको कोउ महामदको मतवारै। मंगल क्यों निबहैयह बुद्धिविबेक बिनानितही दुखभारै३० मंत्रनकेबशतन्त्रन केबशयन्त्रनके बशमें यकफूले। भूतनकेबश मूढ़ पिशाचनके बश मेंभ्रम पेलन झूले॥पौरुषकेबश जालन के बश लालनके बशबैठ अलूले। मंगल भांड़सो स्वांगनकेबश आतम आपन आपुहि भूले ३१ ग्रंथनके बश पन्थनके बश संथनकेबश पाठकडूले। योगन केबश भोगनकेबश रोगनके बशमेंसहशूले ॥ योधनकेबश बोध-नकेबश बोधनकेबश ज्ञानअमूले। मंगल पण्डित बेदन के बश आतम आपन आपुहिभूले३२ बाहिरमें मनसंतसों लागत अन्तर आनबिचार बिचारै। ज्ञानकथै निशिबासर तू खल काम कला छुपिके अनुसारै॥ बातबिबेक कि गावतहै नितमोहमयी मदिरा चितधारै। मंगल स्वांगनसोंन सरैहरिकर्म कुकर्म समस्त निहारै ३३ क्योंनभजै हरित्यागि बिषयरस नीरसलौकिनतूबनिजावै। जन्मअमोल गवांवत क्यों समुझायकहै समुझो न बतावै॥ जा-नतहै पुनिमानतनाहिं महा खलधौं अपनी मतिभावै। मंगल ध्याउ मनोहर मूरतिअन्तरबाहिरजोश्रुतिगावै ३४ कानअघात नहीं सुनिनादते नैनजुड़ात न रूप बिलोकी। ज्योंरसना न थकै शुचिस्वादते नाकसुवासते नाहिं सशोकी॥औ न त्वचापरसेसन थाकत अद्भुतशक्ति सुपांचहुगोकी। मंगल पांचथके मनथाकत नातरु कौनसकै मनरोकी ३५ को असभूतभयो जगमें जेहिके मनमें न लगी बिषयाशा। कामकि लोभकि क्रोधकि मोहकि द्रोहकि छोहकिमोद बिलाशा॥ खानकि पानकि आवन जानकि स्वर्ग अबाणकि मुक्तिप्रकाशा। मंगल इन्द्रिय स्योमन जोलखुसो बिषयी अटकयो भ्रमपाशा ३६ ॥ दंडक ॥ अलखकि बातसमु-

झावै न गुनावै भ्रम वृथहि लखावैजाहि लखतन कोइहै। अगम बतावै जो चलायमान बुद्धिबदै दुबिधा दुराशावश सुमतिबिगोई है॥ अगुणा सुनावै जोगुणानिकरि भांतिभांति दंभकृतबात कैसे सुधि बुधि होईहै। मंगल जो अकर बताय कहै कीन्हे लोक तौ तौ द्वैत भाववश आपुरहा सोईहै ३७॥झूलना॥ माला गलेडारे फिरैं रँग भालतनछालेथरैं बैठैंतहां बानी ररैं जानैंनहीं निजुघात को। आचारके बादी बड़े प्रतिद्वारकाथनको खड़े लै भागवत पोथी अड़ेभाषैं सोहावन बातको॥ एकादशम अर्थावहीं बिज्ञान योग लखावहीं औरोंकोसो समुझावहीं झूठेपिताहितु तातको। मंगल भुलाने लोभमें माया महामद क्षोभमें आकाश साधैं थोभ में कहु मुक्तिको दरशातको ३८ उठिप्रात झाड़ैंगेहको पुनिधोय बैठैं देहको पूजैं बिथोता नेहको दुविधाको हीमेंबासहै। पावैं मनोरथ नाहिने धावैंजो बायें दाहिने तीरथ शिवालय माहि नेपर ब्रह्मको न प्रकास है॥ बिद्या बिधान बखानहीं बिज्ञान मारग जानहीं दृढ़ता नहीं उर आनहीं पंडितकहा अनयासहैं। मंगल बिचारैं योगको आशा लगीडर भोगको चाहैं नहीं भवरोग को बंधन महा भ्रमपास है ३९ गुणज्ञान को उरलेशना बिज्ञान को उपदेशना बैरागको तनभेसना धारण किये संन्यास हैं। जानैंननेती धोतिको अष्टांग साधनहोतिको भाषैं निरंजन ज्योति को कारणलिये अभ्यास हैं॥ श्वासानरोकी एक है योगीबनो अविवेकहै शब्दै अनाहद टेकहै वंचकहिये जपन्यासहै। मंगल न ध्यावै रामको पावै न सोमनकामको ठगताफिरै नरधामको परिणाम यमकीत्रासहै ४० जबतत्त्वकोउपचारना तिहुंलोक को बिस्तारना करणी करमकरतारना सबिता न तारानाथहो। अहंकार पूरुषप्रकृतिना शितकंठपूरण शक्तिना कछुयोग भगता भगतिना आनन्द दुखलहि साथहो॥ मनबुद्धिको निरधारना अधिआतमा व्यवहारना बैकुंठनर्क बिचारना पूरणकलाशुचि गाथहो। मंगल कहां तवतू रहै अब सत्य क्यों नाहींकहै सन्देह

किन मेरोदहै भूपति किनावत माथहो ४१॥सवैया॥जी वअनन्त रचेतिहुंलोकमें एकसों दूसरनाहिँबनोहै। एकसिबुद्धि न एकसि शुद्धिनएकसों ज्ञाननचित्तसनोहै ॥ एकसोंशब्दन एकसों तेजन एकसिशक्तिन भक्तिमनोहै। मंगल धन्यबनावनहार जहांतहँएक हिरूपगनो है ४२ एकस्वरूपतिहूं पुरडोलत रूपअनेक धरेचहुं खानी। ज्योंबहुरूपिय रूपबनावत आनहिं आन प्रकारप्रमानी॥ आपनमें कछुभेदनलागत स्वाँगदिखाय प्रसन्नतप्रानी। मंगलत्यों प्रभुरूपकिये बहु एकप्रभा सबअंगसमानी ४३ ऊपरकोसब स्वाँग बिलोकत अंतरकी न कथाअनुमानैं। साधुनही बकरूप प्रपंचित भूति निचोलरंगेतन आनैं॥ एकनछाप बिभूति बिमर्दित जानत पै मनमें शुचिज्ञानैं। मंगल अंत द्विभांति बतावत साधन की गतिको पहिंचानैं ४४शीशजटा तनक्षार बिमर्दित हस्तकमंडलु सेजकुठामा। भालत्रिपुंड गलेबहुमाल भुजानदियेभलछाप सुपामा॥चाम कुरंग बिछायरहैं नितज्ञान कथैं सुकथाअभिरामा। मंगल जोनिजभाव नहीं दृढ़तो यह साधु किधौं छलसामा ४५ ज्ञान जड़ाउ बिराजतशीशहि भालबिचारकी सोहतरोरी। तोप निचोलरँगेदृढ़ता निधि धीरजकेसँग प्रीतिन थोरी॥ दीठिविवेक बिलोकतमारग राग बिहून कि घूमतिखोरी। मंगल आतमबोध गुरूअससाधु महीतल मुक्तिकीधोरी ४६पैंठहुमेंन खरीदततूमन कौनु अनेठकी बातचलावै। दामलिये कर काम नआवत बातन के मनमोद करावै॥ जानिलियो पहिँचानि भलीबिधि क्योंअब झूँठ हमैं भटकावै। मंगल ज्ञान विवेक बिचारसों आपुतुही कस आनबतावै ४७॥कबित्त॥ काहूथलपंडित स्वरूपधारिबेदपढ़ै काहू थल कबितनकृत कबिताईहै। काहूथलसाधुतन साधनाअनेक कृत काहूथलमौनीबनि बैठोमौनलाईहै॥काहूथलचातुरीसिखावै कहूंसीखैआप काहूथलबिपुलकरत निपुणाईहै। काहूथलमंगलदुचित्तो कहूंएकचित्त ऐसोप्रभु अलख अलख प्रभुताईहै ४८ सवैया॥जोदुख औसुख याभवजीवहि एकअदिष्टहिसोकहिदी-

जिय। ताबिनआननहोतमहीतल जोनिर्बाणको मारगलीजिय॥ तौदुखको सुख एकसमानहिं मानिस्वआतमके रसभीजिय। मंगल ज्ञान गलीसकरी प्रबिशै मतिथूल न कोटिककीजिय४६ ऊसरमेंन उगैतृणकैसहु बारिद जोबरषैसुरपाना। थूहरवृक्षनपात बिलोकिय कोटिउपायनसों गुणवाना॥ब्रह्मबिचार निरूपणज्ञान को त्योंकृतजोनिजसत्यसमाना। मंगलजन्म जरापुनि ताहिन ग्रासतहैबदसाधुसुजाना ५० जो यह जीव निराकृतनाहिन है तनलिंगहिको अधिकारी। भ्रांतिनहीं शुचिआतमदेवकी है प्रगटीकक्षुपिंडबिकारी॥ तौहूंबिचारत आतमज्ञान सम्हारत आतमध्यानअकारी। मंगलनर्कन स्वर्गहिधावत जाइनिवासत धाममुरारी ५१ सूरजते प्रगटैजिमि आतपपाय प्रदोषमिलै रबिजाई। कोटि उपाय बिधानकरै बिनुभानु न आतप देतदि-खाई॥ त्यों सचराचर प्राण बिलोकिय ज्योति अपूरब ब्रह्म लखाई। मंगल अंतमिलै निज नाथहि कौन अधोरधकी गति पाई ५२ तीनिहुंकाल युगान सुचारिहु बेद पुराणकथा सरसाई। जेतिकजाहि समर्थकथै तसदेव अदेवनकी प्रभुताई॥ धर्मअधर्म क्रिया पुनि कर्मभने सब भांतिननेक बुराई। मंगल संतमहातम भाषत बैठिरहे सब लाजि चुपाई ५३ संतकहे हरि मानुष भो अरु संतकहे लवणोद सुखानो। संतकहे पदमूलभयो अरु संत कहे नभगेश सकानो॥ संतकहे शशि क्षीण परयो पुनिसंतकहे बिधिपूजन हानो। मंगल संतकहे नरके हरि पाहन ते प्रगटो जगजानो ५४ ज्यों रबिपाय दिवान्ध न देखत दोष प्रभाकरको कि विहायस। न्हातहि गंगघने मल छूटतहोतन उज्वल धोवत वायस॥ शुद्ध मनोमति होतनहीं तिमिधर्म सुनेरत इन्द्रिय आयस। मंगल को उपदेश मनोहर मूढ़न चेतत कोटि उपायस ५५ब्रह्म सनातन बेद बखानत कोबिद औ कबिता सब गावैं। आदि अनादि अकारण कारण सत्य असत्य न सोउ लखावैं॥ बुद्धि समान प्रमान बिधान करै निरधारि निगूढ़ गुनावैं। मंगल

तू धिषणा बिनुक्यों कहहै जु सँदिग्ध नहीं बिधिभावैं ५६ जोपै
सुपूर्व स्वरूप कृपानिधि तौसुर तेरहभाँतिनचीन्हे। जोप्रभुमानुष
आकृति गाइय तौ फिरि कोमत धारण कीन्हे॥ क्यों पशुकीट
कहौं मनमूरुख है खगसोन अकाशहि लीन्हे। मंगल भूतपिशा-
चन आसर दृष्टिपरै नहिं दृष्टिहिदीन्हे ५७ तत्वकहे मृतिकाजल
पावक बायु सनातनहै प्रभुसोई। जो गुणतौ सतराजस तामस
पूरुष औ प्रकृती नहिं होई॥ त्रैसुरतौबिधिबिष्णु महेशनआयु
बितीतत कालक होई। मंगलभक्ति अभक्तिन भास्वर दृष्टिदिये
नहिं सूझि परोई ५८ वृक्ष खजूरि लगेफल दूरिकिये बलभूरिन
पाथरजाई। मूलबिनाकिमिधायचढ़ैमहिटूटिपरैनहिँ देतदिखाई॥
तातरु पात समीर कि संधिमें घूमतहै नहिँ होत गहाई। मंगल
सोजड़ चेतनहै फल संतलहैं बिन पक्ष उड़ाई ५६ साधु कहा
मन हाथ न जाकरध्यानकहा चितचेत न हीनो। ज्ञानकहा मति
गोथिर नाहिंन भक्तकहा शुचि त्यागनलीनो॥ कौन बिबेक जो
इंद्रियकेबश क्षेमकहावधमोह न कीनो। मंगल ब्रह्म बिचारकहा
जोपै आतम आपुन आपुहि चीनो ६० स्वर्ग निवास कहा मन
तोषित नर्ककहा बहुआधि सताये। भोगकहा सुरवामनके सँग
सुन्दरबुद्धि समाधिलगाये॥ नर्ककलेश महा कृमिचाटत भ्रामिक
लौं बहुपंथनधाये। मंगल भूल दुवौदिवि नर्क जोआतम ध्यान
गहै मुदपाये ६१ आतम ब्रह्म निरंजन भाषत आतम देव अदेव
भुलानो। आतम लोक अलोक अधीरज जंगम थावर रूप स-
मानो॥ तत्व अहंकृत है गुण आतम बुद्धि बिधान समान
बखानो। मंगल ध्यानसदा कृत आतम संतसमागम सोपहिं-
चानो ६२ बिष्णुभजै नरजन्म दुतीनिकु मुक्तिलहै जब मोहन
जागै। भक्ति अनादि निरूपण जोकृतसोउनजन्म अदृष्टहित्यागै॥
शंकर ध्यायलहै शिवलोकहि अंतहु जन्म पदारथलागै। मंगल
ब्रह्मबिचारि कहै उरआवत मोक्षहि सों अनुरागै ६३ एक भखैंफल
वृक्ष न जानत कौनदिशा कयहि देशहिलागो। एकछिये फल

खोजत पादप खातनहीं गुण औगुण पागो॥ एकते जानत पेड़ भलीबिधि खात महाफलजी अनुरागो। मंगल एकन खातन जानत कोतरु कोफलमूलको सागो ६४ बालक रूप महाशुचि सुन्दर देखनहारके चित्तहि भावत। अंधप्रशंसित रूपन देखत टोवनको निजहाथबढ़ावत॥ सूक्ष्म स्थूलन लंबन चाकल ऊंचन नीच जो हाथहि आवत। मंगल क्यों समुझै पुनिमूरुख पाखँड के कर ज्ञान गहावत ६५ दृष्टि न आवत रूप मनोहर शब्द अनूपनदेतसुनाई। भापि न आवत अद्भुत ग्रन्थहै शुद्ध सुगंधिन बासहुआई॥ सुष्टुपदारथहै मनभावन कोटिहु भांति न होतग-हाई। मंगलहै नटवाकसमोहर देखेबनै नहिँजातचलाई ६६ मेघचले शशिमूढ़ बखानत नावचले तरुजातलखाई। बालक ज्यों बहुबारन घूमत बैठिलखैनिजदृष्टि उठाई॥ देशभ्रमैगृह बाहर भीतर भूनभघूमत देखतभाई। मंगलत्यों मनकीभ्रमणा बिपरीत लखे भ्रमजातनशाई ६७ बालकता तरुणाईगई बिर-धापनकेशहु श्वेतबिराजै। आनन दन्तबिहीन सुनैनहिँ दृष्टिपरै जगधुंधसमाजै॥कम्पतहैं करइंद्रिय आनहु कोटिकिये नहिं आवत काजै। मंगल मृत्युसमीपडरैनहिं रामकहै नकुकर्महिं लाजै ६८ क्योंमन ढूंढ़तहै दिशिचारिहु स्वर्गचढ़ै अपवर्गहिधावै। तीरथमूर-ति ज्ञाप न पाठ न पूजनभोजनमें दुचितावै॥ संतनपूछिमहंतन बूझि सबैउपदेश मुनीश्वरगावै। मंगल सत्यगुरू निजआतमआप-नभेदजो आपुबतावै ६९ आठहुयाम प्रसिद्धपुकारत शब्दमनोहर हंसकि बानी। मूरुखलौं दशहूदिशि भ्रामिकअक्षरखोजत आखर दानी॥ चेति अजौं अपने घरबैठिय भूलिगयेधन मूलकिहानी। मंगल जोतिहुंलोकमेंपाइय सोअपनेघरहैन भुलानी ७० पांचहि तत्वनतेपुरतीनहुं हैंबिरचे करतारसुजाना। आपनअंश प्रवेशितकै सचराचरजीव कियेबिधिनाना॥ तोरशरीरसोपंचप्रभूततेहैं लघु दीरघकेरि प्रमाना। जोगुणसिंधुमें सोगुणबिंदुमें मंगलभावद्वितीयनजाना७१॥कवित्त॥अलखकहत लख औरकछुजानोजात बदत

अरूपरूपवाल फिरिकौनहै ।अगुणबखान कृतगुणहीकोलोपहोत अजरबताये जराग्रसिततनतौनहै ॥ कहतअनादि आदिद्वितियबिचारहोत भषतअखण्डखण्डदूसरनजौनहै । पुरुषपुराणसबठामनमेंएकभाव मंगलनजानिपरै द्वितियकोगौनहै ७२ पुरुषबखान कृतनारिकोबिभेद होत अबलाबतायेनररूपी कोऊआनहै। क्लीवतनगाये बुधकबिसाधुमानै नाहिं प्रतितनबासभाषे मायाकोमिलानहै ॥ ऊरधनिवासकहौं प्रभुअधराजैकौनु श्वेतदीपसोहै आन द्वीपकाकोथानहै । मंगलअपार किमि वरणिबतावै ताहि अधिक नहीनहरि सदहिलमानहै७३ कीट औ पतंग पशु खगनर नाग मुनि देवता अदेव जेते त्रिपुरबिचारिये । सबमें बिराजै एकभाव सबठामप्रभु सबनते न्यारोकरि ज्ञाननिरधारिये ॥ जैसेघटमठ धामसबनमेंनाकमिलो बुद्धिचषदेखेन्यारो चतुरसम्हारिये। बुद्धि मेंनआवै नबिवेकज्ञानगावै कैसे मंगलबतावै तातेचुप्पचित्तधारिये ७४ सवैया ॥ ज्ञानगलीचलि सूझिपरै कछु सोऊ बनैकहतेन अनूपा । बुद्धिअचंभित मोहितहै मन शुद्धिअशुद्धि परैभ्रमकूपा॥ लोकमेंनाहिं अलोकमेंनाहिंन थोकमेंनाहिंन रैयतभूपा । मंगल है तुवरूपवहै बिनज्ञानगुरूलखि जातनगूपा ७५ दास अदासन दासकुदास बिचारतहैंप्रभु ब्रह्मसनातन । पालतएकहिभावचराचरमोहनरूप बसै सबगातन ॥ नीचकुलीन गुणीअगुणीमहिदेव गवाशको भेदनजातन । मंगलतासुप्रभालखि नैनन त्यागत संत बिषयबिषपातन ७६ आपनको सबज्ञानियजानत आपनकोसब ध्यानियलेखैं । आपनकोसब भक्तप्रमाणत आपनकोशुचिहीअवरेखैं ॥ आपनकोसबसंतबखानत आपनको तपसीसमपेखैं । मंगलमानयहैकहिये भवआपनिमूरति आपुनदेखैं ७७जोबिधिहैकरताभवको शतबर्ष ब्यतीततकालनशावै । शंकरदेवतुरेशहुको मृतु नाशकरै यहवेदबतावै ॥स्वर्गनिवास सुपर्वतजै तनकालबिलोकि नधीरजआवै। मंगलभूल महाजगजालमें क्योंनकृपानिधिकेपद ध्यावै ७८ कश्यपगे कहि धामअरे मन तेरहनारिनते जगपूरो ।

औ मनुराज कहां अबतात रचेबहुग्रन्थ प्रबंध अपूरो॥ मच्छकहां पुनि कच्छकहांमुनि दक्षकहां कियबास समूरो। मंगलतू मन में नहिं शोचत मृत्यु प्रताप सुने मुख झूरो ७९ त्यागत देहअधी सुकृती सब औसर पायभयो मृतुहाको। जानि न जातकहां चलि जात न घूमिकहै सुबुधी निजथाको॥ कौनदिशा कयहि देशबसै तुर कौनके रूपअरूप प्रभाको। मंगल मानिलयो मनतेनत काकहूँ मोक्ष अधोगति काको ८० केतिककाल व्यतीतभये मनजौनु गयो रथलौटिनहाको। आनि बखान कस्यो न दशानिज नर्क गिस्यो किधौं स्वर्गहिताको॥ भोगकस्यो कि मस्योनिज भूखहि रोगग्रस्यो कि अरोगहिछाको। मंगल लोगकहैं सो सही कयहि मोक्षकहैं औ अधोगतिकाको ८१ आव कहांतेन आपुहि जानत लोगनके मुखसों सुनिमानी। ब्रह्मतेकर्मतेखानि निगोधतेआदम के तनरूह समानी॥ पुत्रपितातें पवित्र सुजीवहै पूरुष औ प्रकृतीहि प्रमानी। मंगलपै न पताकछुलागत खोजतआंधरबस्तु हिरानी ८२ ॥ यथाकबित्त ॥ कोरीकोजमाई एकमूढ़ चल्यो सासुघर चीन्हत न सासु न ससुर निजसारेको। गांवके निकट जात नामहूंको भूलिगयो चकित भ्रमात पुर सकल दुवारेको॥ कोऊ याहि जानैनाहिं यहै पहिंचानै नाहिं बिकल महान मन कीधौं मतवारेको। मंगल सकोविमन लोगनसोंपूछैलाग जानत सजान कोऊ ससुरहमारेको ८३ ॥ सवैया ॥ मातुकहै सुतमोर अहै अरु तातकहै सुतसों निजपूता। नारि बदै पति पुत्र पिता प्रपिता कहि नाति मचाव अकूता॥ मित्रकहै हितुशत्रुकहै अरि शिष्यकहै गुरु आदिप्रभूता। मंगलपैन पिछानतहै कोउ साहिब होइ कि किङ्कर दूता ८४ जीवचराचर जे पुरतीनि प्रकाशित है सबमें पुनि आपू। ज्यों सब बस्तु प्रकाशक भानुहिं ज्ञान बिना भ्रमपूजनजापू॥ शुद्धसतोगुण पूरिरहा निजअज्ञतमोगुणराजल दापू। मंगल मोहन मूरतिध्यावत लागतहै बरदान न शापू८५ ज्ञानबिना सिगरोभ्रमहै नहिंबूझत मूरुखसार असारा। दूरिबदै

भरिपूरि रहा अतिपास भनै प्रभुसत्य अकारा ॥ अन्तर बाहिर आवत जावत आपनभेदसो आपु पुकारा । मंगलपै नहिं मानत तू गुणत्यागत औगुणहोत पलारा ८६ कश्यपकी दशतीनित्रिया तिनके सुत तीनिहुं लोकभरेहैं । स्वेदज अंडज योनिज उद्भिज चारिहु खानिनमें पसरेहैं ॥ एकतेरूपअनेकभये बिनु कश्यपक्यों कहिये बगरेहैं । मंगल कश्यपको जोपै ढूंढ़िय तौ नहिं काहूके धामपरेहैं ८७ जाग्रतमें दुखही दुख देखियहै स्वप्नेमहँ दण्ड कराला । इन्द्रिय थूलसो जाग्रतमें अरु सूक्षम सो स्वपने कृत आला ॥ कारणरूप सुषप्तिहुमें चकिचौंकि उठै पहिरे भ्रममाला । मंगल क्यों निरधारलहै दुबिधा तनतीनिहुं में बिकराला ८८ कारण देहमिटे सुनुरेमनका कहिये बुधिमें न समाई । वृक्षकहां फलफूल सुगन्धिजो बीजहि हानिपरै भ्रमताई ॥ पांचहि तत्त्वन ते तिहुंलोक जो तत्त्व बिनाश तौ लोकनभाई । मंगलकारण आदि बखानिय बादि समस्त अहै निपुणाई ८९ श्रीपरमातम पूरण रूपजो अंतर बाहिर आपुबिराजै । ज्ञान अज्ञानप्रवीण समूढ़न पावत जाकरशुद्ध समाजै ॥ सो जगदीश बतावत पासहि सन्त महन्त कबीश अकाजै । मंगल अन्ध अज्ञान बिना गुरुपंथ न हेरत धावतलाजै ९० बालक तामहँ मोहनहीं बढ़िभूल कि झूललगी मनमेंहै । प्रौढ़भये कछुमोहसकाम इतैउतहेरत भूजनमेंहै ॥ वृद्ध दशामहँमोहबढ़ो उर ज्ञानकहा प्रभुताधनमेंहै । मंगल अंतक अंतअस्यो सब छोड़िगयो अबही क्षणमेंहै ९१ तीरथको पगदेतमिटै अघयों कबिपंडित लोगबखानै । स्वर्ग बसै ब्रतको फलपाय बिलासकरै मखसों सुरथानै ॥ जो अघभोग दुवौपरि त्यागत सोकत तीरथ औ ब्रतठानै । मंगलमोद समेत भजैहरि मुक्ति पदारथ करतल आनै ९२ काम सतावतक्रोध जरावतलोभ भ्रमावतहै चहुंघाई । गर्व गिरावत दम्भरिझावत संतन भावत है जड़ताई ॥ मोहनचावत ज्ञानन आवत चित्तचितावत आन उपाई । मंगल भक्त कहावत ऐसेहु एकहु भावनभक्तिलखा-

ई ९३ सत्य न जानत झूंठ बखानत मानहि मानतहै दुचि-
ताई। मूरति पूजत भोजन भूजत हैं बहु कूजत खाइ अघाई॥
धर्म दुरावत कर्म करावत चित्त न भावत आन बड़ाई। मंगल
भक्त कहावतऐसहु एकहुअंक न भक्तिलखाई ९४ जानत आ-
पनको शुचिआतम आननको अपवित्रबिचारैं। आपनधर्ममनो-
हरहै यहिनाहिंभलो दृढ़ज्ञानप्रचारैं॥काठगढ़ाय गलेगहिबांधिकै
मूरतिपूजि गुमानहिंधारैं। मंगल नेकदयाउरमें नहिंभक्तकहावत
ज्ञानबिसारैं ९५ आतमबास शरीरबतावत लोगनकोमन भक्ति
तेटारैं। देवननींदिकरैंबकबादु न स्वादुलगैमुखजीभवचारैं॥बात
नमानत संतनकी नकबीशकिबाणि हियेककुधारैं। मंगलजोहठि
आतमपूछिय तौफिर बत्तिसदांतनिकारैं ९६ ब्रह्मनिरंजनज्योति
बतावत कोऊकहै निरबाणबिलासी। श्वेतसुद्वीपबखानतकौनहुं
शेषकेशीश कहैमनभासी॥ कोउबदै हरिधामसुआनहिं जानतहैं
मुनिज्ञानप्रकाशी। मंगलकेउरमेंदुबिधा फिरिहै समठामहिंकौनु
बिलासी ९७ ब्रह्मजोहै नरकायबिराजत तौपशुकीट बिहायस-
कोहै। देवनमेंनित संतनमें प्रभुबास करै गुणपंडितसोहै॥ दैत्य
असंतनमेंपुनिकौनु बिराजिरहा गुणऔगुणजोहै। मंगल भूलकि
बातकहोन द्वितीयकहींइकआपुहिदोहै ९८ एकबखानतहैद्विबि-
धाक्यहिभाषिकहै बकतापुनिकोरे। वाहिपुमानभनै यहिनारिन
नारिपुमान गुमानकेभोरे॥ एकअपार द्वितीय अनादि बखानत
केतिकहैंमतिथोरे। मंगल सूरजभूप द्विभांतिन ज्ञानबिना सबके
करजोरे ९९ कबित्त॥ ब्रह्महीतेमाया ताते तीनिगुण पांचतत्त्व
सूक्षमसथूलकबि दुबिधलखावैहै।तत्त्वनतेसातनाकदेवबासदेखि-
यत सकलपताउत्पति तत्त्वकरिगावैहै॥ आदिऔ अनादिजगद्वि-
विधिबखानैंलोग मंगलकेचित्तएक सांचीबातआवैहै। मेरीजान
बिश्वनाथ बालकस्वभाव जैसे रचिकैघेरौंदा पुनि आपुहिमिटावै
है १०० क्षमामिटिगंधिहोत गंधिनीरयोगलेत आपरसरूपपाय
रहतनलेशहै। पुनिरस पावकशरीरमिलि जातपुनि पावकहुरूप

होतकहतसुदेशहै ॥ रूपपवमानहोत कहतसमीर पुनि परसमें लीनसोतौ नभहिप्रवेशहै । नाकमुनिशब्दसोतौहोत अहँकारपुनि प्रकृतिपुरुष हरि मंगल हमेशहै १०१ सवैया॥ केतिकपण्डितश्रौ कबिचातुर देवअदेव मुनीशसुजाना । गावतजाकरि कीरतिरेमन पावतपारनवेदबखाना ॥तासुकथाकिमि जानिसकै बकबातु करै किचुपायअयाना । मंगलगूढ़ कहाकहिये करिये मनहींमनताकर ध्याना १०२ शेषमहेश बिरंचिसुरेशहु जाहिभजैंकछुभेदनपावैं । देवअदेव कबीशमुनीश क्षमाधरकोबिदआननगावैं ॥जाकरभेदन भाषतसंतन पीरगुरूकथिअंतबतावैं । मंगलसो परमातमअव्यय मूर्तप्रत्यक्षबदैं औलखावैं १०३ काकरध्यान कहैबुधितू अबहीं तुवरूपहिसोंमनमाना । रूपनरेख अनीहअनाकृति श्वेतनपीतन श्यामप्रमाना ॥ आदिन मध्यनअंतनतत्वन मातपितागुरुबंधुन गाना ।मंगलआपुहिआपुबिचारत जानतआपुन जानतआना १०४ एकहिपाट बिछायमहीरचि ब्राह्मणशूद्र कुलीनरुनीचा । तापर बैठिअनावत जेंवत खोवतज्ञान बिनीतनगीचा ॥ जोसमुझैमनमें गुणधारि तौवूसरमानतहीं मनहीचा । मंगलतूमन शूकरलौंजल पान करै प्रथमैं करिकीचा १०५ एक ऋचानि सुनी कबहूं कहैं वेदनकीहमजानतबानी । आगमकोनहिं अक्षरजानत नींदत हैं अवरूपअज्ञानी ॥ पाठकस्यो न श्लोककबौं कहैं भाषि पुराणन तुच्छकहानी । मंगलक्यों समुझैंजड़मूरुख आपनहीं मतमानत मानी १०६ सूर कही सब श्याम कथा तुलसी रघुनायक गाथबखानी । दासकबीर बयो सतिरामहिं नानकनाम भयो रुचिमानी ॥ दादू मलूक धना सदना अरु गोरख बाणि भली पहिंचानी । मंगलमूढ़कहैं इनते हमहैं अधिकै जो भयौं निजबानी १०७ जेखल खोजतहैं धनको तनको रँगिके करबेत लगाये । लोगन सों जगनाथ पुरीकर पंथबताइचहैं भटकाये ॥ ज्ञानकथैं बदिबाद बड़ो सुनिसाधुलखैं अनुआनँदपाये । मंगलते ठगिजात सही न कही न कहीअपनी अनखाये १०८ बामनसों नितप्रेम

बढ़ावतनामनलोंअनचाय न वामी। दामगुलाम जोसेवकपेटके मांगतद्वारनवामनधामी॥ राम रहीम करीम न केशव बाद बिवादकरैं मतिवामी। मंगल तू चुप क्यों न गहै खलसंगकिये जगमें बदनामी १०९ शब्द अनाहद होतसही जब मूंदि सुनै दशहू तनद्वारा। वायुनिरोधत शब्दउठै यह ज्ञान अखंड प्रवीण बिचारा॥ जोसमुझौ मनजानि परै तलझालरि शंखमृदंग उचारा। मंगलप्राण अयामकिये छलपायुनशै सुखलोंकरतारा ११० शून्य समाधि लगाय बिलोकत धूमिल धूसर रंगपसारा। जो त्रिकुटीतटलौं चढ़िजाय लखै सुत्रिवेणि कि पावन धारा॥ अम षढ़ेकछु होत प्रकाशहै भासत योग प्रचारनहारा। मंगलखोजत ब्रह्मतहां नहिंआनस्वरूप जोआनप्रकारा १११ ढूंढ़िफिर्योंबहु तीरथमूरति बूझिफिर्यों बहुपंथअथाई। खोजिफिर्यों बहुभेष मभागख शोधिफिर्यों कितनीगुरुवाई॥ वादविवाद अनेककिये कहुंलाजिगयो कहुंआनलजाई। मंगल सांचु कहावतहै यहछूंछपछोरत जातउड़ाई ११२ काहुकह्योउठिप्रातहिंन्हाइयपूजिय देव सुध्यानलगाई। काहुकह्यो कलिमाबिन मोक्षन काहुबह्यो निरबाणगुणाई॥ काहुभन्यो गुरुबिप्रप्रतारत काहुबखान स्वग्रंथ कथाई। मंगलकोनहिं बोधभयो जसछूंछपछोरत जातउड़ाई ११३ योगवशिष्ठ पढ़्योकछुआदर दासकबीरके ग्रंथ मँगाई। जीवनके कछुपंचकभाषि सुनीकछु सुन्दरकी कबिताई॥बादकरैं कबिपण्डितसों अरु नींदतहैं मुनिदेव अथाई। मंगलसांचुकहावतहै कुम्हड़ा मुखमें न अजाकेसमाई ११४ देवनकोनित हैपरि देवन सेवनकी किमिबात चलाई। आतमभूत कुलालसमानहै पालकबिष्णु नठीकलगाई॥ शंकरकोपिसँहारतहैं यकब्रह्मनहीं बहुठास दिखाई। मंगल सांचु कहावतहै कुम्हड़ामुखमें न अजाकेसमाई ११५ आपुन कर्म कियोनकबौं कहैं कर्मकिये कछुहोत न भाई। दास कबीर मलूक धना तुलसी गुरुनानक बाधि सुनाई॥ यों शुकदेव भन्यो गुरुगोरख कर्मबशीजन मुक्तिनपाई।

मंगल युद्ध पठान बिजय बेहना निज अंगन फूलिसमाई ११६
श्रीगुरुनानक दासकबीरके आनहुं पंथमें लीन्ह मुड़ाई। मानत
हैं फिरि वेद पुराणन तीरथ औ ब्रत देत उड़ाई॥ वाद विवाद
विशेष करें अरु भाषि कहैं गुरुग्रंथ गुढ़ाई। मंगल पै निज भेद
न जानत खांड़ बँधावत ऊख पराई ११७ वेदको अक्षर कान
सुन्यो नहिं बादि कहै श्रुतिसार असारा। आगमको कहुं रूप
न देख भनैं झगड़ा बड़ शास्त्र बिचारा॥ बादि कहैं हम ब्रह्म
बखानत देत लखाय अखंड अपारा। मंगल आपन भेद न जा-
नत भीति उठावत ईंट न गारा ११८ ज्यों पवमान प्रसून के
बागते आवत शुद्धसुगन्धि लखाई। सोई समीर कुगन्धि निकेत
ते बाहिर होत कुबास बसाई॥ थोरकुजाइ सुगन्धि कुगन्धिनि
शुद्ध स्वरूप सदा सुखदाई। मंगल त्यों यह जीव अदोषित
पापरु पुण्य ग्रसो नहिं जाई ११९ लोचन हीन न अंध बखा-
निय नैनसमेत न देखनहारा। पंगु नहीं पगहीन चलै नितपंगु
अहै पग नाहिं बिकारा॥ गुङ्ग रहै रसना शुचि सोहर बोलत है
नहिं जीभ सहारा। मंगल है यह अद्भुत कारण जीवहिंको करि
देखु बिचारा १२० दण्डचहूं दिशिते नहिं रोवत रोवतहैं सुखके
अधिकारा॥सोवतहू महँ जागत देखिय जागत सोवत के अनु-
सारा॥ गावतहै न बिवाहमें गीत अस्वारथ ताल मृदंग पसारा।
मंगलहै यहअद्भुत कारण जीवहिको करिदेखु बिचारा१२१मूढ़-
नके सतसंग बिहारत साधन संगतिते कहुं न्यारा। ज्ञानिन में
नितवासकरै कहुं ध्यान लगावत पारि अपारा॥ न्हात जम्हात
खवावत खातन पाठक पाठित शुद्धप्रचारा। मंगल है यह अद्भुत
कारण जीवहि को करि देखुबिचारा १२२ चेतन बस्तु सही
तनुमें बिन चेतन चेतनी दृष्टि न आवै। अंधहि दीप दिखावत
सूझन खोजन को निज हाथ बढ़ावै॥ लोग सबै हठिवाद बदैं
परमातमहै तनुमें न लखावै। मंगल भूलकि बातयहै ज्यहिरूप
नहीं त्यहि देखनधावै १२३ औघड़ मंत्रलिये यक डोलतभ-

मिष भोजि सुराकृतपाना। बातन मानत आननकी यकबाम कि सेवतही बधठाना॥ एक तजे मदिरा अरु आमिष दक्षिण भागलिये अभिमाना। मंगलहै रुचि आपनि आपनि जोपैकरै परमातम ध्याना १२४ काकर पापग्रसै क्यहि कारण काकर पाप सुपुण्य प्रकासै। काकर पाप निवासत नरकन काकर पाप जो स्वर्गबिलासै॥ काकर पाप भ्रमावत जन्मन काकर पापसुमुक्तिप्रभासै। मंगल काकरपाप मिलावत ब्रह्म निरंजनमें अनयासै १२५ यातनुमें यक चेतनहै ज्यहिशक्ति सबै तनु इन्द्रिय डोलै। चित्त अहंकृतहै मन बुद्धि न सूक्षम थूलन कारण खोलै॥ सोवत जागत जागत सोवत आपबखानकरै अनमोलै। मंगल शक्ति अनंतवहै बिन जानते पारस पाथरतोलै १२६ जाहिनहीं दुख औ सुख व्यापतनेह न नात न पास न दूरी। जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुरीयरहै यक भावन अल्पनभूरी॥ जीवतहै न मसै मृतु अंतक रूप अरूप रहातनुपूरी। मंगल सो यह जीव कहावत आदि अनादि कि जीवनमूरी १२७ छूति औ पाक कछूनहिं मानतनीच कुलीनदुवौ यकसारा। खात अघाइ ठठावत पेटहि रामभजै नहिंतत्त्व बिचारा॥ ऊपर हंसस्वरूप बनेसति भीतर बांयस रूप अपारा। मंगल नावत वेषहिमाथैं भलो रजतेकरि सांप पसारा १२८ श्रीगुरुकी कथनी निज भावत बापकिगावत दादे कि लावत। पंथकि आवत ग्रंथसुनावत ज्ञानि कहावत बेद मिटावत॥ कर्मनभावत धर्म भ्रमावत आन बतावत आन करावत। मंगल जो अपनी कछु पूंछिय तौ जमुहात बृथा मुख बावत १२९ ऊरध बाहुबने तनु पीड़त पांवबँधेनर झूलझुलावै। भूतिवने अवधूति बने बिन जूतिचले पग कंटकधावै॥ भूमि गड़े तनु आगि जरेबिन अन्नमरे निज जीवसतावै। मंगल कर्म अस्वारथहै नहिँ खोजनहारके हाथन आवै १३० ब्रह्मकि बाणि भरी सब बेद कलाम खुदाजो क़ुरान कहावै। आगम बाणि मुनीश्वनकी जुहदीस रसूलकि बाणिबतावै॥ बाणि पुराणमहा

मुनि व्यास कि ब्रह्म निरूपण ज्ञान लखावै। पुस्तक जैनसो पारसबाणि चहूंदिशि मंगलबाणि जनावै १३१ जेतिक पंथ महीतलहैं सबमें यकबाणि नबीन भरीहै। एकबिलोकिद्वितीय बनावत सो उपमा ममचित्तश्ररीहै॥ ज्यों यकराग अलापकियों सुनि आनहुं तासुकि कूक करीहै। मंगल बाणि विवाद चहूं दिशि ब्रह्मबखानत बाणिडरीहै १३२बाणिकहै यक सर्गुणनिर्गुण बाणिकहै यकब्रह्म श्रमाया। बाणिबदै सबठाम कृपानिधि बाणिभनै प्रभुहैयहि काया॥ बाणिकथै यकसिर्जनहारहै बाणि कहै यक पालकपाया। मंगल बाणिगुणै यकहंतक आदिअनादि बतावत माया १३३ एक कि बाणि द्वितीय न जानत एककि बाणि अनेक लरैजू। कूकुर भूँकि उठोभ्रम खाय सुनेत्यहि आनहु भूँकिपरैजू॥ वाजिमि बोलिश्रृगालउठो सुनतेबहुतासँगही फिकरैजू। मंगल बाणि अजीत महाकछु नीककहौ तो बिमूढ़ झरैजू १३४ सूरज अस्त समय दिनहै किधौं रातिकहो कबि पण्डित ज्ञानी। छांह औधूपके मध्यकहा किधौं धूपकि छांहबदौ गुणखानी॥ पूंछत मंगलसों बहुलोग बतावन में अतिहोतगलानी। ईश्वरजीवके मध्यतथा बड़िसंधिपड़ी नहिं जातबखानी १३५ चिन्ततचित्तगहै अहँकारगुणानिकरै मनबुद्धिदृढ़ावै। पाप अपापथसैयहिजीवहि क्योंदुबिधा अपनेमनआवै॥ मोहनखायअघायसुभोजन सुंदरआपनपेटठठावै। मंगलभूलि बड़ीभवमेंतजि साहिबसेवकराजबतावै १३६ चित्तकहाभवआशकहौ अहँकारकहा दुबिधा तनुतापै। कौनअहै मनहैभ्रमणाबुधिरूपकहा थिरतातनु आपै॥ चित्तनहीं अहँकारनहीं मनबुद्धिनहींयदिज्ञानप्रलापै। मंगलहै यकतूबिधिचारि बिचारिहिये किनदोषनढांपै १३७कारणदेह रहै जबतोरिनहीं तबज्ञान अज्ञानबखाना। इंद्रिय ज्ञानन कर्मरहै मनबुद्धिनहीं शुचिब्रह्मसयाना॥ सूक्षमतत्त्व नदेखिपरै नहिंमातु पितागुरु नामहिंजाना। मंगलसोकि अचेतकिचेतनब्रह्मकि जीव कहैबुधिमाना १३८लिंगशरीर लियेनवतत्त्व कहींकिमिसत्रहथूल

प्रमाना। इन्द्रियकर्मसज्ञानअहैं दशबुद्धिहिस्योमनपंचकप्राना॥ कर्मप्रताप बिलासभयोलहि धूलशरीरभर्यो अभिमाना। मंगल कौनकहै मनकीगति सत्यअसत्य बिबेकअयाना १३९ थूलशरीरसो जाग्रतहै ज्यहिके कृतमानतदेव अदेवा। लिंगबिभेदजोस्वप्न कथाजहँ सत्यअसत्य लखेबहुभेवा॥ कारणरूपसुषुप्ति बिचारिय सत्यअसत्य दुवौनिटितेवा। मंगलकारणके परकीगतिसोइतुरीयबिलक्षणएवा १४० बालकतामें सतोगुणव्यापत शुद्धअशुद्ध कछूनहिंजामें। प्रौढ़भये तरुणाईगहे उरव्यापतमोगुण क्रोधसकामें॥ वृद्धवही क्रमहोतरजोगुण ज्ञानअज्ञान दुवौभ्रमतामें। मंगल अंतत्रिदोषमिले यहजीव प्रबुद्धलहै परधामें१४१ जोअजसा किमिजन्मधरै अरुजोअनयोनि सोयोनिनधावै। जोबिभुसो किमि ह्वोतप्रजा अरुजौनु अनीहसोदेहनआवै॥ अद्भुतभक्ति भणैकबिपक्षित ताकरकीरति कयोंकरिगावै। मंगल शोचिरहौ मनहींमन नामप्रभावहि बाणिबतावै१४२ कबित्त॥ आशाबश तीरथफिरत दिशिचारिहु में आशाबशकरतसुव्रतमनमूढ़है। आशाबशक्षीरपान आशाबश नीरन्हान आशाबश देतदानढूंढ़तअढूंढ़है॥ आशाबश ठाढ़रहै आशाबश देहदहै आशाबश बालकबिलोकै ज्वानबूढ़है। आशाबशमंगलकबित्तछन्ददोहाकहै आशापरे जीवपावै बड़ोज्ञान गूढ़है १४३ आशाबश पाठजापआशाबश ज्ञानध्यान आशाबशबिपुल करतरणधावैहै। आशाबशमोहद्रोह आशाबशकामकोह आशाबशरामराम रटतस्वभावैहै॥ आशाबशनातगोतआशाबशबामहोत आशाबशदेवजन कीरतिसुगावैहै। आशाबशमंगलदुचित्तोनित भूमितल आशापरे जीवबड़ो गूढ़ज्ञानपावैहै१४४ आशाबश बिकलनरकबास पावैआप आशाबशसुरपुरलहत निवासहै। आशाबश उपजि मरत बारबारदेखु आशाबश मोचिजात प्रभुपदपासहै॥ आशाबश पापलागै आशाबशपुण्यजागै आशाबशसम्पदाको अधिकबिलासहै। आशाबशमंगलसुजानता दिखावैनिज आशापरेगूढ़ गतिज्ञानको बिभासहै१४५ आशाबश भूतनकोदेत बलिभागदेखु

आश्रावश्यदेवलमें देवपूजैधाइहै। आश्रावश्यकविगुण आदरविचारै चित्त आश्रावश कुवचवदत भ्रमपाइहै॥ आश्रावश यागदान होम संयमादिकृत आश्रावश ऊरधपवन ठहराइहै। मंगलनिराश्रहोत पूजै मनकामनान भटकति आश्रावश दुविधाकोभाइहै१४६ अटवीनिवासजोबिलोकैराम सत्यभाव तौतौकेतेबनबासि बनहीमें बासैहैं। जोपैजलथायीभगवान भेटैसत्यताततौतौ जलमानुषको जलमें बिलासैहैं॥ जोपै निरबासना मिलतप्रभु धायआय तौतौ बालकोटिन नगनअनत्रासैहैं। मंगल बिबेकीसाधु मुनिजनज्ञानवान तिन्हैंन स्वहाइदम्भप्रकटनिरासैहैं १४७सवैया॥बन्दनभाल दिये यकचन्दन एकत्रिपुंड्र चढ़ावत माटी। कण्ठबँधी बहुमाल सुकाठकि गोलरची तुलसी तरुकाटी॥ रंगिभुजाउरदारिसुलोचनकोउरहैलपसी मुखचाटी। मंगलज्ञान उदोत भये यह दम्भ लखाय महा खटपाटी १४८ पावक पूजत ईश्वर जानि कोई कृतसागर पूजनधाई। पूजत भूमि समीर महीधर सूरज चांदहिजानि भलाई॥ मूरति ताबुतसाहिब मानत पूजन में रुचि होत सदाई। मंगल ज्ञान उदोतभये उर भ्रामिकहै यह दम्भ लखाई १४९ जानि सकै हरिकी गतितौ भ्रमजाने बिना ते महाभ्रभलागै। गाय कहै जु अकत्थ बड़ो भ्रमगाये बिनाउर प्रेम नजागै॥ ज्योति निरंजन नैन लखैभ्रम देखे बिनाकस तारस पागै। मंगल तू इतही उतही भ्रमहै इतही उतहीकिन खागै १५० देखत नैनन आपन रूप अनेक द्वितीय स्वरूपनिहारै। कान सुनैनिज नादनहीं जगबाद सुनैउर प्रेम प्रचारै॥ आपनि गंधि न सूंघत घ्राण अनेकन गंधिकुगंधि बिचारै। मंगल ज्योंतु बिलोवत नीरचहै घृत आपुनआपु उचारै १५१ आदि कहोतौ अनादि कहा अरु मध्यकहा पुनिअंत कहाहै। जोपै अनादि कहौ परमातम तौ फिर कौन प्रकाशि रहाहै॥ जोअनुमान कहौं तो बड़ाभ्रम आन प्रत्यक्षन रूप महाहै। मंगल क्यों निरधार लहै भ्रमज्ञान गुरू मुखज्ञान लहाहै १५२ बेदबदै उप-

बेद बदैं सब आगम और पुराण बतावैं। सन्तबदैं जुमहंत बदैं मुनिराज बदैं कविपण्डित गावैं॥ धूत बदैं अवधूत बदैं बुधजैन बदैं अनुमान लखावैं। मंगल क्रूरबदैं बिपरीतहि पूरपरै नमनैं पछितावैं १५३ ॥ कबित्त ॥ कहत ज़बूरहै किताबभगवानही किलाइकेदाऊद सबलोगन सुनाईहै। अपर भषत तौरेत भगवान भाषी सोई लाइ मूसा केतीकीन्ही चतुराईहै ॥ ईसा कि इंजीलसुनी कहत महम्मद कि बड़ी फ़ुरकान जो खुदाई कि बनाईहै। मंगल किताबचारि एकही को हालकहैं एकमतनाहीं यातेबड़ी भ्रमताई है १५४ ज्ञानसमुझावै कोई बेदन किगाथ भाषि आगम पुराण आदिसकल दृढ़ाइकै। चातुरी बतावै बिषयानकी अनेक भांति आतुरी लखावैं रणकाज भलिभाइकै ॥ राजकाज बातनमें भेदभाव भाषिकहैं यवनादि बिज्ञता सुनावै मोद पाइकै। मंगल सुजान होत दुबिधा लखात चित्त सुमति बिहीन मूढ़रहत चुपाइकै १५५ कोऊ कहै मक्के औमदीने में निजात होत कोऊकहै काशी किधौं गयामें निजातहै। कोऊकहै रोजा औ नमाज़ बिनै पारकहां कोऊकहै पूजापाठ सुमति दृढ़ातहै ॥ कोऊकहै दाढ़ी मेरी नूरहै खुदाई यार कोऊ कहै शिखाकीधौं धरम बिभातहै। मंगल कहत कोऊ सुन्नति ईमानदारी कहत जनेऊ कोऊ भ्रमही कि बातहै १५६ कोऊपट ओटकरि भोजन वनाइ खात कोऊखाइ अचवत चौकहीमें तातहै। कोऊ तनु भूतिलाइ बसन बिहीन डोलै कोऊ माला तिलक रँगत निजगातहै ॥ कोऊ मारि पक्षी पशु कहत बिहिश्त जात कोऊ बड़ो जैनी माँस मदिरा न खातहै। हिन्दू औ मुसल्मान आप आपथाकजानै मंगल कहत सब भ्रमही कि बातहै १५७ बेद बेद अंग इतिहास के बिवाद सुनै गुनै चित्त आपने कथान के बिधानको॥ सारासार बूझिमन बोधै बहुभांति नित्य सत्य ज्ञान ग्रामवास रहत सुजानको ॥ बेदको बनायो औ चलायो कासुद्वार तात चलत को ताकी चालि मानत प्रमान को। मंगल महान

भूउ कौनी भांति दूरि होइ गुरू सत्यबादी कौनशिष्य ज्ञान मानको १५८ परम प्रधान बेद गावत कितेव जाहि कहैं शिर ताज सब लोगन में एकहै । रबिलित भानु जहां करत प्रकाश नाहीं रोशन सों आपकीधौं सूरज अनेक है ॥ अ॰शिव आदि काल होतजाके क्षणहिं में ऐसा करतार सदा अनव्यतिरेक है। सींक ओट मंगल पहाड़ जैसे भाषियत तैसे जीव पारब्रह्म बिबुध बिबेकहै १५९ सात सुरबास सात नागलोक आदि धाम काल बश सकल नशात श्रुति साखीहैं । नभपवमान शिखि नीर भूमि लोप होत माया अलगाय कीधौं कौनेथल राखी है ॥ जीवन के पाप कृत दंड दानि कहां रहे ज्ञानिन के ज्ञान जानै कौनी गली नाखी है । मंगलत्रिदेव गुणतीनि एक भावहोवैं दुबिधा दुराशाको विवेक अभिलाखी है १६० पुनि धपजावैं चारिखानिजीव देवासुर जहां तहां बासदेत ऊँचनीच धामहै। काने पापकीन्हो कानेसुकृत कमायो तबजाके फल भोगरोग शोग अप काम है ॥ असुर बराकद्विज श्वपचकहायो काहे कर्मप्रताप जोपै जाना अभिराम हैं । मेरे मन मंगल न भूलैतू बिबेक पाय कोधौं नाशिजात होत काकोधौं बिराम है १६१ तारागण द्वीपकहैं नभके प्रबीणकोऊ कोऊकहै लोकन को होवतप्रकासहै। कोऊकहै अचल चलायमान सूरचाँद कोऊ षदेदेवता प्रतापी तेजभासहै॥जाहिचषदेखै ताकी बातनाहींलेखै फिरि कैसेअवरेखै हरिश्चतनु अबासहै । मंगल विवेकसों बिचारि देखुआपुमांझ इतउत चारिओर मायाको बिलासहै १६२ मात पितुसोदर कलत्र सूरमोहरूप डारतसमुद्र बिषयान नेहनातेहैं। आगे त्यागिजातकोऊ पाछेको बिचारुचित्त सकलसमाज हितकारीनदिखांतेहैं॥कायाआप प्यारीजाहि पालत सुभोजभोजि संगतासुअंतकाल कौनजीव पातेहैं । मंगल समस्त झूठ कारोबार तीनलोक आपसाथ नेहजोरु नातेसबजाते हैं १६३ येरेमनमूढ़ तोहिं अधिक दशातिरहीं जानिके प्रधानदेह शामको सदाहीहीं।

सीतौभाव तेरैनेकपायो नपरीक्षाकाल चेटकी चटोरनीच जानो सबमाहीहौं॥ अबन भ्रमाविबात अलिक अबूझभाषि संकमानु मेरीभूप तेरीदास नाहीहौं। नातो पछितायमन मंगल अपार भांति जबैशुद्ध भावकहो श्यामाश्याम पाहीहौं१६४ मनुजशरीरदीन्ह्यो सुखभोग हेतुनाथ सकलबिभूति ताके संगउपजाईहै। जगदुखरूपी सबभांतिन बिचारिचित्त परमसुजानप्रभुकीन्हीनिपुणाईहै॥ भोगभाग योगयाग लोगनके शोगलाग भूलीमूलबातदूत प्रेरणा प्रभाईहै। मंगल सजान जन मायामद ज्ञानहीन इतउत काया मनधाया दुहूंघाईहै १६५ सवैया॥ शैविकहैं शिव बौधकहैं बुध जैनिकहैं प्रभु पारसनाथै। बिष्णुकहैं कोउशक्ति बदै गणनाथ पुरातन भाषतगाथै॥ ईसाकहैं कोउ मूसाभनैकोउ फौहरसूल मुहम्मदसाथै। मंगल सांचु सबैजन गावत खोजन हारके लागनहाथै १६६ तीरथन्हान करैब्रतसंयम दान अनेक न देजोअनाथै। औघड़ ध्यान पियैमदिरा शुचिदूरिकरै रुचिपाथ अपाथै॥ मूरतिपूजि बजावत घंटन दीप दिखाय सुनावतगाथै। मंगलकर्म अस्वारथ है नहिं खोजनहार के लागनहाथै १६७ ठाढ़रहैं तनुदण्ड सहैं मुख मौनरहैं पशुलौं बनिजावै। दूधपियै तजिअन्नभखै त्वधूमघुटै जलबास लु भावै॥ नग्नरहै बहुज्ञान कथै नित ध्यानधरै नसुनै नसुनावै। मंगल कर्म अस्वारथहैनहिं खोजनहारकेहाथन आवै १६८ कीजिय बेगिदया जनपै हरिये दुखरोग सबै यदुनायक। औषधमूल प्रतापतुम्हार धन्वंतरि रूपधरे गदघायक॥ शूलममूल नशायकृपानिधि राखियदास कहौंमय लायक। मंगलटेक तुम्हारिगहे नितआनके द्वारसुहात न पायक १६९ शूरगभस्ति नशावत नीरन जो वृषकी तपताननतापै। ज्वालप्रकाश बुझाय समीरन जोप्रकटावत झंझप्रतापै॥ कादरयुद्ध डरावतबीरन जो बहुसंगरके गुणथापैं। मंगल धर्म मिटावत धीरज जोपृथुदण्ड प्रसिद्धप्रदापै १७० दारिद्रनिन्दतहैं धनवानको जानतये अदया जगमाहीं। दीननकोधनवान

कहैं लघुतुच्छ कुबर्ण सदा भ्रम नाहीं ॥ एक भुलान महामद लोभमें दूलरके दिन धावत जाहीं । मंगलसोइबड़ो दुहुंभांतिब जासुहिये हरिभक्ति लखाहीं १७१ ॥ दंडक ॥ मनवश कीन्हे भोग चाहत न चित्त नेक कटुरस अरस कि नाहीं पहिंचानहै। भोगन किबात सुनि जिय अकुलात तात धाता सुरत्राता स्वाद काग बीटमानहै ॥ शीतकाल ग्रीषम समान भाव धारे रहै अमित उदास रूप हरिरस सानहै। मंगल सुजान बदै सोई भूमि भागवान सुरुचि बिराग जाके ऐसो ज्ञान गानहै १७२ बिषयी समाज बिषरूपी जानि भागै दूरि हाटकादि सम्पतिबिचारैमोह दानीहै। नारी जग अखिल समान मातुजाके चित्त अरिता हिताई दुरि आई द्रोह सानीहै ॥ देखत तमाशे सो धरातल अमोह रूप हँसत ठठाइ कहुँ रोवत अमानीहै। मँगल बिरागी सोई बेदभाव भाषियत रहत उदासी ज्ञान धाम अनुमानीहै १७३ बासना न व्यापै जाके जीव काहूभांति और कामना सतावैनाहिं काजनमें जाहीहै। बसन बिहीन जैसे बासित जहानतैसे सेज अनसेज सोवै शोकताप दाहीहै ॥ दीन हितकारी धनवान कोन नेह चित्त जोईभाव मानै ताकी सुमति सराहीहै। मंगल महीप कौनु दीन भूमिहीन रावबाके एकभाव रागत्यागी त्रिबिधाहीहै १७४ कामज्वाल दाहतन शुद्धचित्त शीतलको क्रोध नाग काटत न बेकामन जाकोहै। मदकी मदाई तट जात न सजान जानि लोभसिन्धु बोहित बिचारो ज्ञान बांकोहै ॥ मोह तम बुद्धिमणि रूपीदेखि नाशिजात माया दाया हेरि जासु द्वारहून झाकोहै। मंगल बिरागी ऐसो बिदित त्रिलोक सत्य गावत प्रमाणसाधुबेदजाकोसाकोहै १७५ गुफाको निवासी बनबासीकहै पर्णकुटी नातो नेह सांचो जाके नामकोअधारहै। काहूसों न नेह बैर जात काहूद्वार नाहिं राति दिन भासकिधौं एकही प्रकारहै ॥ देवता सिहात रागहीन देहधारि देखि यम अकुलात वाकेनाम की पुकारहै। मंगल बिरागरूप गावत सुजान ऐसो नातो दम्भ

मायामोह प्रेरेरागकारहै १७६॥सवैया॥ वा प्रभुके कछु जाति न पांति न आश्रम बर्ण बिचार न कोई। देव अदेव न मानुष नाग बिहायस औ पशु कीट न सोई॥ पांचहुतत्त्व परेगुण तीनिते चौदहलोक निवास करोई। मंगल बुद्धिबितर्कनते परसोपरमातमवेद बदोई १७७ जीवनमेंनित आपु बिराजत जीव सबैतन तासु समाहीं। भाषतयों मुनि पण्डित आगम है अनकाय अलिप्त सदाहीं॥ दूरिमहा सबतेअति पासहि है प्रतिठामन औ पुनि नाहीं। मंगलके दुबिधा सुनिलागत द्वैत अद्वैत दुवौ यकठाहीं १७८ बासरमें निशि देखिपरै नहिं औ रजनीमहँ द्योस न भाई। आगम एक निरागम दूसर बर्ण अवर्ण अकथ्य कथाई॥ चेतन औजड़ एकस्वरूप नहै थिर अस्थिर की निपुणाई। मंगलके न सँदेह रहा गहिएक द्वितीय कथाबिसराई १७९ जो गुणखानि तोहै कबि कोबिद जो गुणहीन तो मूढ़ महाना। औ तनहीनतौ शून्य बताइय जो तनधारि तो थूल समाना॥ जो बिधि और निषेध बतावत तौ बपु सत्य धरे अलज्ञाना। मंगल देखु बिचारि सबै बिधि सत्य असत्य न जात बखाना १८० छन्द॥ सातद्वीप नवखण्ड धरातल भरयोजीव बहु काया है। सात पताल जीव बहुबासी अस्मृतिवेद लखायाहै॥ सातहुस्वर्ग बसत सबजीवहि आगम ज्ञानिन गायाहै। मंगल पांच तत्त्वहू जीवहि जीवबिना भ्रममायाहै १८१ बाण और निरबाण बखानैरामधाम दरशायाहै। उत्तम पुरुष प्रकृतिकृत तिहुंपुर प्रकट जीवपद पायाहै॥ जीवबिहाय मृतक जड़रूपी कोधौं काहिबनायाहै। मंगल जीव अमर अबिनाशी जल थल आपु समाया है १८२ जीव ईशयुत ब्रह्म बखानै सामबेद शुचिबानीहै। आनहुँबेद भणैयह जीवहि पूरण पुरुष अमानी है॥ जोकोइ जीवभावको जानै सो परिपूरण ज्ञानीहै। मंगल जिन आतम निज खोज्यो माया तिनहिं डेरानीहै १८३ दातामुक्ति बसत को काथल मुक्तिदेत पुनि काकोहै। फूटो पणव शब्दपर बंधन

जीवअलख जग याकोहै ॥ दुखीसुखी नहिं अंध बाधिरो चलै न अचला थाकोहै। मंगलस्वयंसिद्धि नितआतम बंधनमोक्ष न वाकोहै १८४ जितै देखिये तितभरि पूरो कोईदिशा न खालीहै। लीलाआपु लखैया आपुहि कतहुँपुरुष कहुँआलीहै ॥ जड़चैतन्य भाव भवभारी मालाको कृत मालीहै। मंगल मालधारिहूमाली कर्त्ताकर्मलखयालीहै १८५ ॥ सवैया ॥सम्पतिके हित दम्भ दिखावत सम्पतिकेहित जीवसतावै। सम्पतिकारण वेषबनावत सम्पति कारण देह जरावै ॥ सम्पति कारण सेवक साहिब सम्पति कारण मौन लखावै। मंगल सम्पतिके बशडोलत बोलत शब्द मनोहर भावै १८६ आपनहीं मगशुद्ध प्रचारत आपनहीं मगबक्र सिधारै। आपनहीं उपदेश बतावत आपनहीं उपदेश बिचारै ॥ आपनहीं ऋषि आतम ध्यावत आपनहीं मतिहीन पुकारै। मंगल आपनहीं बड़ज्ञानन आपतो दूसर कौनपसारै १८७ आपन जानत ब्रह्मबखानत आगमबेद पुराण बिचारी। भूलबड़ीभवजाल भ्रमैनित दम्भक्रि पद्धति दीन्हप्रचारी ॥ सत्य असत्य नमानत तूमन अग्र न आव न जातपछारी। मंगलशुद्ध स्वरूपन ध्यावत बंधनमुक्त कि ब्राणि नियारी १८८ बंधनहैसुख इन्द्रिनको भवमोक्षहै नीरस गोकुल जोई। भावस्वभाव प्रभाव नजानत सेवत देवन स्वारथहोई ॥ जो दुबिधा अपनी बिभयी त्यहि त्यागत जीव कृतारथ कोई। मंगल ब्रह्मबिचारन भाषिय भाषत दूसर रूप कथोई १८९ जोप्रभु ज्योतिस्वरूप अरे मन तौनहिं तत्त्वशिखीकरि मानिय। शक्तिअनंत न जानिसकै बुधि ज्ञान बिबेक विधान प्रमानिय ॥ संतकहैं प्रभु दृष्टिनआवत मूढ़नकेसँग रक्षकगानिय। मंगल भूलमिटै न बिनागुरु कोटिक ग्रंथ सुनोजो बखानिय १९० देहधरे मनुजाद बिषय रस देह धरे मनमोह दुरावै। देहधरे दुबिधा बश भ्रामिक देहधरे शुचि आतम पावै॥देहधरे खलरूप कहावत देहधरे मुनि पद्धतिभावै। मंगल देहबिना सिगरोभ्रम बंधन मोक्ष न भोमन आवै १९१

सार असार बिचारन आवत त्यागत देह किधौं अनुमानी। जानत कोउन मानतहै मन यातन हीन दुबुद्धि सुजानी ॥ काल कलेवर लोक दृढ़ावत हीन शरीर न जानतप्रानी। मंगलजीवन धन्य धरातल बंधन मुक्ति बतावत बानी १६२ आपन बोध भयो न अरेमन औरन को कलज्ञान सिखावै। गाठरिया तककी उर मंदिर बाहिर उज्ज्वलवस्त्र दिखावै ॥ ज्ञान बिबेक के रंग रँगोनहिं कानन में रज चन्दनलावै। मंगल सत्यबदै न सुनैमन ऐसे नहीं अपनो पद पावै १६३ आयुघटै प्रतिश्वासन शोचत मोहमयी मतवारु लगाहै। कोटिन मारग या भव में मनक्यों तिनको मत तू अवगाहै ॥ अन्धकि दीपक राशि बिलोकत नैनन बारहिये उमगाहै। मंगल त्योंभव आतम ज्ञानहै जानतसंत असंत खगाहै १६४ पूरबके कृतदंड सभोग बतावतहैं सबलोग सुजाना। ब्रह्म प्रभाकिधौं ब्रह्म बिभागको जन्मसमै कृतनाहिं बखाना ॥ जो प्रभु चाहत सोकृत जीवहि लागत है यह अद्भुत ज्ञाना। मंगल पूरब पश्चिम को तजि कीजिय ध्यानसदा भगवाना १६५ राम कथा सुनि नींद सतावत बामकथा श्रुतिदेत अभागा। पारसको तजि पाथरमानि गहेकर कांच सचिक्कन लागा ॥ ज्ञानिन के ढिग भूल बतावत है ब्यसनी सँगजी अनुरागा। मंगलजाति कुजाति सुमानिय ऊपरहंस जो अंतरकागा १६६ मान महाधन रूप गुमान सुबर्ण महामद जीव समानो। पौरुष मोह जो आश्रमगर्व स्वपंथको पक्ष अहंकृतभानो ॥ फूलो फिरै खल लोभवं बीथिन ज्ञानिनके तट जात लजानो। मंगल राम न ध्यावत जोनर सोइ महाजड़ जी अनुमानो १६७ ॥

झूलना ॥ क्षर रूपको बिस्तारहै सो पुरुषप्रकृति बिचार है नव तत्त्वकी पुनि सारहै जानैजो सज्जन काय है। माया जो अगम अपारहै बहुभांति त्रिपुर बिहार है करनी करम करतार है सोई जो पूरण भाय है। दश तीनि सुर अधिकार है नर नाग पशुनभ चारहै कृमि अमित रूप बिकार है भवसकल तनसोनशाय है।